ारिका

जलविज्ञान एवं जल संसाधन

पर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिसम्बर 15-16, 1995

रुड़की

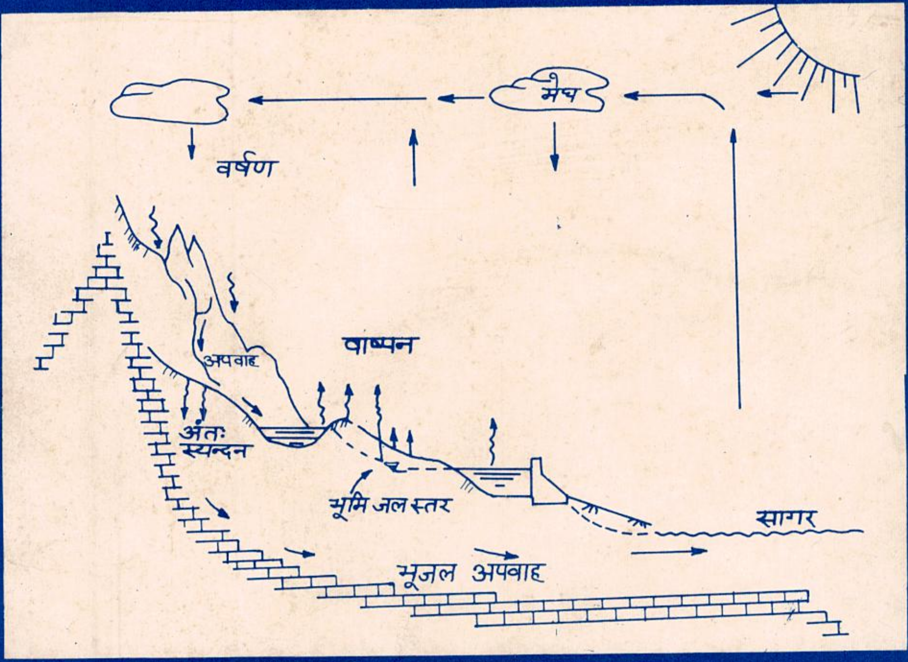

आयोजकः

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

जलविज्ञान भवन

रुड़की – 247 667, भारत

प्रायोजकः

भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति

जलविज्ञान भवन

रुड़की – 247 667, भारत

With Best Compliments From :

ROYAL

SAFE COMPANY

(KAROL BAGH)

APPROVED GOVT. CONTRACTORS & ENGINEERS

MANUFACTURERS & DEALERS OF

STEEL & WOODEN FURNITURE, STEEL ALMIRAHS, IRON SAFES, STEEL RACKS, STEEL FILING CABINETS & STEEL SECURITY EQUIPMENTS

For OFFICES, HOMES & HOSPITALS

H.O. & Showroom:
13/39, ARYA SAMAJ ROAD
Near Arya Samaj Mandir
KAROL BAGH, NEW DELHI - 5

Works:
C-114, NARAINA INDUS TRIAL AREA
PHASE -1, NEW DELHI PH.: 011 - 5414978

Phones : 5725393, 5712960, 5786219

स्मारिका

जलविज्ञान एवं जल संसाधन

पर

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिसम्बर 15-16, 1995

रुड़की

आपो हि ष्ठा मयोभुवः

आयोजकः
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रुड़की – 247 667, भारत

प्रायोजकः
भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति
जलविज्ञान भवन
रुड़की – 247 667, भारत

माननीय

प्रधान मंत्री

श्री नरसिंह राव

के

विचार

अभी दो एक महीने पहले जब मैंने वैज्ञानिक बन्धुओं को सम्बोधित किया तब मैंने अपना एक निजी अनुभव उन्हें बताया था जिसे मैं अब आपको भी बताना चाहूंगा । मेरे गांव में एक छोटा सा तालाब है जो बरसात के दिनों में लबालब भर जाने के बाद उफन कर बहने लगता है । किन्तु वर्षा रूक जाने पर पानी मिट्टी के सरन्ध्र होने के कारण बह जाता है जिसके कारण बहुत थोडे से पानी का भण्डार ही सम्भव हो पाता है । परिणाम यह होता है कि वहां बरसात के दिनों में कोई भी फसल नहीं उगाई जा सकती क्योंकि उसके तत्काल बाद जब फसल को पानी की जरूरत पड़ती है तब उसके लिए भण्डार किया हुआ पानी भी उपलब्ध नहीं होता । हम यह जानना चाहते हैं कि जब पानी बहूतायत में उपलब्ध होता है तब इस पानी का कैसे उपयोग किया जाए और जब चारों ओर पानी बहुत कम मात्रा में हो तो कौन सी फसल उगायी जाए । इस बात का उल्लेख मैंने अपने वैज्ञानिक मित्रों से भी किया और यह सवाल मैं पिछले 25 वर्षों से कर रहा हूं और इसका मुझे अभी जबाव नहीं मिला है । मेरे विचार से भारत के ही नहीं विश्व भर के विकासशील देशों के गांवों के ग्रामवासी भी ऐसे ही सवाल कर रहे होंगे और उनके जबावों की प्रतीक्षा में होगें । इक्कीसवीं सदी के लिए यह एक चुनौती है क्योंकि अगले आठ या दस सालों में इन सवालों का जवाब नहीं मिलने वाला। हमें यह सवाल स्वय से और वैज्ञानिकों से करते रहना होगा और समाज के भूमिहीन लोंगों को तो अपने लिए इसका जवाब पाने की कोशिश करते ही रहनी होगी ।

'इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां' विषय पर आयोजित तीसरे इन्दिरा गांधी सम्मेलन में प्रधान मंत्री श्री नरसिंह राव द्वारा अंग्रजी में व्यक्त किए गए विचारों के उद्धृत अंश का हिन्दी भाष्य ।

हमारी दार्शनिक परम्परा में यह विश्वास किया जाता है कि क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर जीवन के पांच मूल तत्व हैं । पर आज इनका अस्तित्व खतरे में है, क्योंकि हमने इनका प्रबंध बुद्धिमत्ता एवं कौशल से नहीं किया है। जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि के कारण जल की मांग पर दबाव बढ़ता जा रहा है। पर्यावरणीय प्रदूषण का भी इसपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । सभी संसाधनों, विशेष तौर पर भूजल का तो कहीं-कहीं अत्यधिक दोहन हुआ है। हम यह सुनिश्चित मानकर चलते हैं कि जल तो उपलब्ध है ही, पर हम यह नहीं समझ पाते कि जल के संसाधन भी जोखिम में है और संकट आसन्न है ।

यदि प्रति व्यक्ति के हिसाब से गणना करें तो हमारे देश में वर्षा का औसत एवं भूमि की उपलब्ध ता पर्याप्त है । तथापि, कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां जरूरत से ज्यादा वर्षा होती है जिसके कारण भूमि क्षरण, परतीकरण, जल जमाव एवं बाढ़ आदि की समस्याएं उत्पन्न होती है । दूसरी तरफ कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां वर्षा बहुत कम होती है तथा सामान्यतया सूखे की स्थिति बनी रहती है । हमारे यहां भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टी है जिनकी जल निकासी के लिए तरीके भी अलग-अलग हैं । विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में जल के सर्वोत्तम उपयोग के लिए गहन अनुसंधान की आवश्यकता है ।

:- **श्री विद्याचरण शुक्ल**
केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान समिति की सोलहवीं वार्षिक आम सभा में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री, श्री विद्याचरण शुक्ल द्वारा दिए गए अभिभाषण से उद्धृत अंश ।

जल संसाधन एवं संसदीय कार्य मंत्री
भारत
नई दिल्ली-११०००१
MINISTER OF WATER RESOURCES & PARLIAMENTARY AFFAIRS
INDIA
NEW DELHI-110001

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा जनसाधारण में जल विज्ञान विषय के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर को चिरस्मरणीय बनाने हेतु एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

जल की नियमित मात्रा, बढ़ते उपयोग एवं अनियमित वितरण के कारण जल संसाधन का इष्टतम उपयोग आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में जल का नियमित उपयोग तथा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में जलाशयों के इष्टतम नियोजन की आवश्यकता है ताकि बाढ़ का प्रकोप न्यूनतम किया जा सके। आधुनिक युग में जलविज्ञान के क्षेत्र में जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की अनेक समुन्नत तकनीकों का विकास हो चुका है, इन तकनीकों को जनसाधारण तक पहुंचाना है और इसी उद्देश्य को लेकर जन भाषा हिन्दी में संगोष्ठी आयोजित करना निःसंदेह प्रशंसनीय प्रयास है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की मैं कामना करता हूँ।

(विद्याचरण शुक्ल)

कृषि मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली 110 001
Agricultural Minister
Government of India
New Delhi - 110 001

सत्यमेव जयते

संदेश

मूझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की "**जलविज्ञान एवं जल संसाधन**" विषय पर राजभाषा हिन्दी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर मैं राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की को विशेष रूप से बधाई देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस संगोष्ठी के दौरान होने वाले विचार-विमर्शों से जल संसाधन की विभिन्न समस्याओं और आपदाओं से निपटने के लिए नई तकनीकी विधियों का अभ्युदय होगा।

मैं संगोष्ठी के सफल आयोजन पर अपनी शुभकामनांए प्रेषित करता हूँ।

(बलराम जाखड़)

सत्यमेव जयते

विद्युत मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110 001
MINISTER OF POWER
INDIA
NEW DELHI-110 001

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी राजभाषा हिन्दी में आयोजित कर राह है। इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

जल मानव ही नहीं, बल्कि पूरी पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखने में एक बहुमूल्य भूमिका अदा करता है। मुझे विश्वास है कि इस संगोष्ठी में देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से आने वाले वैज्ञानिकों, अभियन्ताओं और बुद्धिजीवियों का जल से संबधित विभिन्न पहलूओं पर विचार-विमर्श उन सार्थक विधियों, नीतियों एवं उपायों को जन्म देगा जो हमारी मानव सभ्यता ही नहीं, बल्कि पूरी पारिस्थितिकी तंत्र का अस्तित्व हमेशा खतरे से बाहर रखने में सहायक सिद्ध होगा। इसके साथ ही यह बहुत महत्वपूर्ण तथ्य है कि इस संगोष्ठी का माध्यम राजभाषा हिन्दी है। राष्ट्रीय स्तर पर हो रही इस संगोष्ठी में, यहाँ देश के विख्यात वैज्ञानिक, अध्यापक, विद्वान एवं विचारक उपस्थित होंगे, हिन्दी का प्रयोग किया जाना अवश्य ही एक अत्यन्त सराहनीय प्रयास होगा। तकनीकी क्षेत्र में जहाँ हिन्दी का प्रयोग लगभग नगण्य है, वहाँ ऐसा एक भी कदम, प्रशंसा के योग्य है। मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने अपने दिन-प्रतिदिन के कार्य-कलापों में हिन्दी भाषा में प्रयोग को आत्मसात् कर लिया है। जलविज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी भाषा में एक शोध पत्रिका का प्रकाशन तथा भारत मौसम विज्ञान विभाग की तरफ से प्रकाशित पत्रिका "मौसम" में सारांश को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया जाना, जलविज्ञान एवं जल संसाधन के क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी की प्रगति का एक पुख्ता सबूत है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपका यह प्रयास तकनीकी क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को नई दिशा प्रदान करेगा।

मैं राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की को इसके लिए हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ। मेरा पूर्ण सहयोग सदैव आप सबके साथ है।

(एन. के. पी. साल्वे)

GOVERNOR
सत्यमेव जयते
ARUNACHAL PRADESH

RAJ BHAVAN
ITANAGAR-791111

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की दिनांक 15-16 दिसम्बर, 1995 ई0 को **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर राजभाषा हिन्दी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

भारत एक विशाल देश है तथा प्रत्येक प्रांत की जलविज्ञानीय समस्याऐं अलग-अलग हैं। खास तौर से पूर्वोत्तर राज्यों में जलविज्ञान के क्षेत्र में बहुत कुछ करना बाकी है।

मुझे खुशी है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान इस क्षेत्र की जलविज्ञानीय समस्याओं के प्रति जागरुक है।

इस संयोष्ठी के आयोजन से निःसंदेह हमें जलविज्ञानीय क्षेत्र की नयी-नयी जानकारी प्राप्त होगी। मैं इस संगोष्ठी की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

(माता प्रसाद)

मुख्य मंत्री
बिहार

पटना

संदेश

यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की के तत्वावधान में दिनांक 15-16 दिसम्बर, 1995 को रूड़की में हिन्दी में "**जलविज्ञान एवं जल संसाधन**" पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी की गतिविधियों का माध्यम राजभाषा हिन्दी बनाया जाना निःसन्देह एक सराहनीय प्रयास है।

आयोजन की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाऐं।

(लालू प्रसाद)

माधवराव सिंधिया

मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
INDIA
NEW DELHI-110001

2 दिसम्बर, 1995

सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान,, रुड़की "जलविज्ञान और जल संसाधन" पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी राजभाषा हिन्दी में कर रहा है । राष्ट्र के निरन्तर विकास के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि जल संसाधनों का समुचित विकास, उपयोग, संरक्षण और प्रबन्धन हो । इस दृष्टि से यह संगोष्ठी काफी महत्व रखती है । मुझे उम्मीद है कि जल के भिन्न पहलुओं पर कार्यरत वैज्ञानिक, शिक्षाविद, अभियंता और नीति-निर्धारक इस संगोष्ठी में अपने अनुभवों और तकनीकी कार्यों का आदान-प्रदान कर जलविज्ञान के विभिन्न विधाओं में हो रहे शोध को एक नई दिशा और गति प्रदान करेंगे ।

इस संगोष्ठी के आयोजकों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और मैं संगोष्ठी के सफल होने की कामना करता हूँ ।

(माधवराव सिंधिया)

सत्यमेव जयते

मंत्री
पर्यावरण एवं वन
भारत

MINISTER
ENVIRONMENT & FORESTS
INDIA

प्रिय डा. सेठ,

आपकी संस्था राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान द्वारा दिनांक १५ से १६ दिसम्बर, १९९५ को विशेषकर हिन्दी के माध्यम से आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी, जल अनुसंधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है ।

मुझे आशा है कि देश के विभिन्न विद्वान, अभियन्ता एवं वैज्ञानिक एकजुट होकर अपनी तकनीकों द्वारा जलविज्ञान के क्षेत्र को एक नया आयाम प्रदान करेंगे ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

(राजेश पायलट)

डा० सौभाग्य मल सेठ,
निदेशक, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
जलविज्ञान भवन,
रूड़की-२४७ ६६७,
उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
असम
CHIEF MINISTER
ASSAM

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की के प्रोत्साहन पर हिन्दी भाषा को माध्यम रखते हुये "**जलविज्ञान एंव जल संसाधन**" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

आशा है कि इस संगोष्ठी के मंच पर उभरी विचारधारायें बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचने में सफल होगी।

इस आयोजन पर मेरी हार्दिक शुभकामनायें ।

हितेस्वर सइकिया

(हितेस्वर सईकिया)

P.V. Rangayya Naidu

जल संसाधन राज्य मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110 001

Minister of State for Water Resources
India
New Delhi - 110 001

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 15-16 दिसंबर, 1996 को राष्ट्रभाषा हिन्दी में आयोजित की जा रही है एवं इस अवसर पर एक सोवेनियर का प्रकाशन भी किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की को विशेष बधाई देता हूँ।

मुझे आशा है कि संस्थान का यह प्रयास जल संसाधन की सीमित मात्रा एवं उसके उचित प्रबन्धन की भूमिका को आम जनता तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। जल संसाधन की सीमित मात्रा एवं अनियमित प्राकृतिक वितरण से इस देश में ऐसी संगोष्ठी का विशेष महत्व है जहां एक साथ बैठकर विचार-विमर्श के द्वारा हमारे जल वैज्ञानिक एंव अभियन्ता इन समस्याओं से जूझने एवं इनसे बचने के उपाय सुझा सकते हैं।

मैं इस संगोष्ठी की सफलता की कामना करता हूँ।

(पी. वी. रंगय्या नायडू)

जगदानन्द
मंत्री
जल संसाधान एवं पर्यटन विभाग
बिहार

दुरभाष 221331, 225696 का0
220485, 221187 आ0

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की द्वारा **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन राष्ट्रभाषा हिन्दी में किया जा रहा है।

ऐसे तकनीकी विषय पर अपनी राष्ट्रभाषा में संगोष्ठी का आयोजन एक सराहनीय कदम है।

इस संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएँ।

29.11.98

(जगदानन्द)
मंत्री,
जल संसाधन एवं पर्यटन, विभाग,
बिहार, पटना।

रमेश चन्द्र

बी. ई० (आनर्स), एम. एस. सी. (लंदन)
डी. आई. सी., एफ. आई. ई.
RAMESH CHANDRA
B.E. (HONS), M.Sc. (Lon), D.I.C., F.I.E.

अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग
तथा पदेन सचिव, भारत सरकार
उपाध्यक्ष - आई. सी. आई. डी.
Chairman, Central Water Commission
& Ex. Officio Secretary to the Govt. of India
Vice-President, ICID,
315, सेवा भवन, आर. के. पुरम,
नई दिल्ली-110066
315, Sewa Bhawan, R.K. Puram,
New Delhi-110066

संदेश

मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति के तत्वावधान में रूड़की में 15-16 दिसम्बर 1995 को **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। प्रसन्नता का विषय यह है कि यह राष्ट्रीय कार्यक्रम राजभाषा हिन्दी के माध्यम से हो रहा है।

आशा है देश भर से आये विद्वान, अभियन्ता, विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक, उपलब्ध नयी तकनीकों की सहायता से जलविज्ञानीय आंकड़ों के संकलन के लिये एवं जल संसाधनों के विकास के लिये परस्पर अर्जित जानकारी के आदान-प्रदान के द्वारा, उपायों को ढूंढने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगें।

मेरी अत्यन्त शुभकामनाऐं।

(रमेश चन्द्र)

TEL. : OFF 608312, RESI. 6873507, FAX : 6875516, TELEX : 31-72483-CWC-IN, GRAM : CWC, NEW DELHI

अरूण कुमार

सत्यमेव जयते

अपर सचिव
भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
ADDITIONAL SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF WATER RESOURCES
SHRAM SHAKTI BHAVAN
NEW DELHI

संदेश

मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति के तत्वावधान में रूड़की में 15-16 दिसम्बर 1995 को **''जलविज्ञान एवं जल संसाधन''** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। प्रसन्नता का विषय यह है कि यह राष्ट्रीय कार्यक्रम राष्ट्रभाषा हिन्दी में हो रहा है।

आशा है देश भर से आये विद्वान, अभियन्ता, विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक, नयी तकनीकों की सहायता से जलविज्ञानीय आंकड़ों के संकलन एवं जल संसाधनों के समुचित विकास के लिये परस्पर अर्जित जानकारी के आदान-प्रदान के द्वारा उचित उपायों को ढूंढने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

अ. कुमार

(अरूण कुमार)

सत्यमेव जयते

सदस्य
योजना आयोग
योजना भवन
नई दिल्ली - 110001
Member
Planning Commission
Yojana Bhavan
New Delhi - 110001

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूडकी **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर राष्ट्रभाषा हिंदी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी करने जा रहा है। पुरातन समय से ही ये देश बाढ़ एवं सुखे जैसी गम्भीर समस्याओं से जूझता रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते नये आयामों का फायदा तभी है जब उनकी जानकारी आम जनता तक पहुंचे। मुझे उम्मीद है कि देश के अन्य शोध संस्थान भी इस सराहनीय प्रयास का अनुसरण करेंगे तथा अपने-अपने क्षेत्र में देश की वैज्ञानिक उपलब्धियों को आम जनता तक पहुचाएंगे।

मैं संगोष्ठी के आयोजकों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ तथा संगोष्ठी की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

जयंत पाटील

(जयंतराव पाटील)

एम0 एस0 रेड्डी
M.S. REDDY
Tel. 371 0305

सत्यमेव जयते

सचिव
भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
SECRETARY TO THE GOVERNMENT OF
INDIAMINISTRY OF WATER RESOURCES
SHRAM SHAKTI BHAWAN, RAFI MARG
New Delhi - 110001

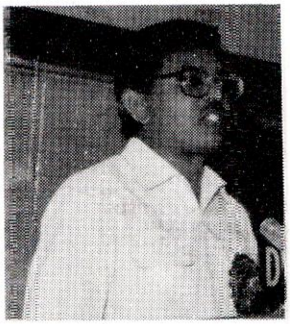

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की जनसाधारण में जलविज्ञान विषय के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी हिंदी भाषा में करने जा रहा है।

जल की नियमित मात्रा, बढ़ते उपयोग एवं अनियमित वितरण के कारण जल संसाधन का इष्टतम् उपयोग समय की एक प्रमुख मांग बन चुका है। सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में जल के नियमित उपयोग की आवश्यकता है जबकि बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जलाशयों के इष्टतम नियोजन की आवश्यकता है ताकि बाढ़ का प्रकोप कम से कम किया जा सके। आज के इस कम्प्यूटर युग में जलविज्ञान के क्षेत्र में काफी उपलब्धियां हासिल हो चुकी है। भविष्य में आने वाले प्रवाह एवं जल प्रबन्धन की अनेक तकनीकें विकसित हो चुकी है, जिनसे जल संसाधन का इष्टतम् उपयोग किया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि अन्य शोध संस्थान भी राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की के इस सराहनीय प्रयास का अनुकरण करेंगे तथा जनमानस में इस धरती के सबसे महत्वपूर्ण संसाधन के उचित प्रयोग के प्रति चेतना उत्पन्न करेंगे। मैं संस्थान को इस अवसर पर बधाई देता हूँ तथा संगोष्ठी की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

एम. एस. रेड्डी

(एम. एस. रेड्डी)

Shri Zahirul Islam
Minister
Irrigation, Assam, Dispur
Guwahati-6
Ph. : 60194 (O), 62221 (R)

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की भारतीय राष्ट्रीय जल विज्ञान समिति के साथ संयुक्त रूप से 15-16 दिसम्बर 1995 को दो दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन **''जलविज्ञान एवं जल संसाधन''** जैसे महत्वपूर्ण विषय पर राजभाषा हिन्दी में कर रहा है।

मुझे आशा है कि यह संगोष्ठी जन साधारण में जल एवं जलविज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करेगी। मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

(ज. ईसलाम)

राजस्थान
सत्यमेव जयते
सरकार

देवी सिंह भाटी
सिंचाई मंत्री

निवास : 48, सिविल लाईन्स, जयपुर
दूरभाष :कार्यालय : 380598, 380222/2321
निवास : 381038, 382148

संदेश

जल ही जीवन है। यह कहावत वर्तमान संदर्भ में केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है। जल स्त्रोतों का विकास एंव उनका उचित उपयोग केवल कृषि क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि विद्युत उत्पादन, बाढ़ एवं सूखे की समस्याओं से निपटने, पेयजल एवं अन्य कई समस्याओं के हल के लिए प्रथम आवश्यकता बन गया है। राजस्थान के संदर्भ में तो जल जन-जीवन का प्राण है।

यह जानकर कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की दिनांक 15-16 दिसम्बर, 1995 को रूड़की में राजभाषा हिन्दी में "**जलविज्ञान एंव जल संसाधन**" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हिन्दी हमारी राजभाषा के साथ-साथ जन-जन की भाषा है। लोक-महत्व के तकनीकी विषयों पर सार्थक संवाद तभी सम्भव है, जब जनता उसे समझ सके और उसमें रूचि दिखाये, तभी जनता शिक्षित एंव जागरूक होगी।

संगोष्ठी की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाऐं।

(देवीसिंह भाटी)

Tel. NO. 222142/224391(Off.)
223560 (Res.)
Telex. No. 0237/216 NEC IN
Fax. No. (0364)222140

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
पूर्वोत्तर परिषद सचिवालय
शिलांग-793001

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
North Eastern Council
Shillong-793 001

दूरभाष - 0364-222142 (कार्यालय)
0364-224391 (कार्यालय)
0364-223560 (आवास)
0364-222140 (फैक्स)

एच. ए. डी. सावियन
सचिव
उत्तर पूर्वी परिषद सचिवालय,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
शिलांग-793001

संदेश

मूझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान दिनांक 15-1 दिसम्बर, 1995 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर आयोजित कर रहा है

सर्वप्रथम मैं आयोजकों को इस महत्वपूर्ण विषय पर राजभाषा हिंदी में राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोज के लिये बधाई देता हूँ।

विगत कुछ वर्षों में जलविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध कार्य हुये हैं, परन्तु आम जनता को इ शोधों तथा जलविज्ञान के क्षेत्र के महत्व की उचित जानकारी नही पहुंच पाती है, खासकर भारत के उत्त पूर्वी क्षेत्र में जो जलविज्ञान एवं जल स्त्रोत के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट स्थान रखता है। इस संगोष् का माध्यम हिंदी है, इसलिये मुझे आशा है कि इसके माध्यम से जलविज्ञान की उपलब्धियों एवं इसके महत् को आम आदमी तक पहुंचाया जा सकेगा।

मैं पुनः सगोष्ठी के आयोजकों को बधाई देता हूँ तथा इसकी सफलता की शुभकामना करता हूँ।

(एच. ए. डी. सावियन)

एम. ए. चितले, महासचिव
M.A. chitale, Secretary General
International Commission on Irrigation and Drainage

ICID·CIID

Central Office
48 Nyaya Marg, Chanakya Puri, New Delhi 110021
Phone : 301 6837 or 3015679 Fax : 91-11. 3015962
E-mail : icid @ sirnetd. ernet.in Telex : 031.65920
ICID in Cable : INTCORI

संदेश

पूर्वकालीन भारतीय परंपरा में जलविज्ञान पर काफी घ्यान दिया गया है और इस विषय पर प्रचुर लेखन हुआ है । परिणामस्वरूप जल व्यवहार संबंधित सूक्ष्मासूक्ष्म सुंकल्पनाऐं भारतीय भाषाओं में - राष्ट्रभाषा हिन्दी में व्यक्त करना कठिन नहीं है । विश्वभर के सभी विद्वानों ने राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की की ओर से प्रकाशित 'हाइड्रोलोजी इन एनसिएन्ट इंडिया' (प्राचीन भारत में जलविज्ञान) पुस्तक की सराहना की है । इसी परंपरा को आगे बढ़ाने की दृष्टि से **'जलविज्ञान और जल संसाधन'** विषय पर राष्ट्रीय संगोस्ठी का आयोजन करना सर्वथैव आवश्यक और उचित कदम है ।

आशा है देश भर से आये विद्वान, अभियन्ता, विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक, उपलब्ध नयी तकनीकों की सहायता से जलविज्ञान आंकड़ों के संकलन के लिये एवं जल संसाधनों के विकास के लिये परस्पर अर्जित जानकारी के आदान-प्रदान के द्वारा, उपायों को ढूंढ़ने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे तथा हिन्दी में इस विषय पर विचार-विमर्श कितना आसानी से और कितना अर्थपूर्ण हो सकता है इसका भी अनुमान प्राप्त करेंगे।

मेरी अत्यन्त शुभकामनाऐं ।

(एम. ए. चितले)

अ0 दि0 मोहिले
महानिदेशक
A.D. MOHILE
DIRECTOR GENERAL

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण
सामुदायिक केन्द्र, साकेत, नई दिल्ली-110 017
NATIONAL WATER DEVELOPMENT AGENCY
Community Centre, Saket, New Delhi-110 017

संदेश

भारत के शहरी और ग्रामीण इलाकों में पेय जल पहुँचाना, कृषि क्षेत्र का विकास करना, जल विद्युत ऊर्जा का निर्माण, बाढ़ एवं सूखे की समस्याओं से निपटने इत्यादि के लिये जल का सही आंकलन एवं जल गुणवत्ता की सही पहचान हमारी पहली आवश्यकता है। इस वैज्ञानिक युग में राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जल विकास और जल प्रबंध की महत्ता काफी बढ़ गई है। इन कार्यों के लिए जलविज्ञान का आंकलन महत्वपूर्ण है।

ऐसे में, यह जानकर कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की 15-16 दिसम्बर, 1995 को रूड़की में राजभाषा हिंदी में "**जलविज्ञान एवं जल संसाधन**" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। जब तक हम जलविज्ञान के महत्व को आम भाषा में प्रस्तुत नहीं करेगें, उसके संरक्षण एवं प्रदूषण निवारण के लिए जन-साधारण का समर्थन पूरी तरह से प्राप्त नहीं कर पायेगें।

मेरी ओर से शुभकामनाऐं।

(अ. दि. मोहिले)

दुरभाष/Phone: 669164 टेलेक्स/Telex: 031-73012 फैक्स/Fax: 91-11-6960841 ग्राम/Gram: JAL VIKAS

जय कृष्ण
एफ0 एन0 ए0

61, सिविल लाईन्स
रूड़की- 247 667
दूरभाष : 72338

संदेश

मुझे बहुत खुशी है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर दिनांक 15-16 दिसम्बर, 1995 को रूड़की में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

विगत कुछ वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में यह महसूस किया जा रहा है कि कभी समाप्त न होने वाला यह प्रकृति का वरदान "जल" हमारे अविचारपूर्वक उपयोग से, बढ़ती हुई आबादी की मांगों को पूरा करने में असमर्थ होगा।

हमारे देश में भी पिछले कुछ वर्षों से सभी के द्वारा विभिन्न मंचों से इसके समुचित विकास, उपयोग एवं प्रबन्धन की बात की जा रही है। विभिन्न अनुसंधान संस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं संगठनों द्वारा इस दिशा में काफी प्रयास किये जा रहे हैं।

और देशों से अलग हमारे देश की यह समस्या है कि साल में यहां वर्षा केवल कुछ ही दिन होती है। 90 प्रतिशत दिन सूखे होते हैं। हमारे लिये यह आवश्यक है कि पानी नदियों में बहकर समुद्र में जाने देने के बजाय उन पर बंधे बनाकर वर्षा के पानी को एकत्रित किया जाए जिसको आवश्यकता अनुसार मोड़ा जाय। इससे बाढ़ भी कम आयेगी और समय पर पानी व बिजली भी मिलेगी।

जलविज्ञान के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों तथा विकास को इस संगोष्ठी द्वारा जन साधारण तक पहुंचाने का राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। संस्थान की वर्षगांठ मनाने का इसके अतिरिक्त कोई भी उपाय सार्थक नहीं था।

मुझे विश्वास है कि संस्थान इस संगोष्ठी के आयोजन के उद्देश्य में निःसंदेह सफल होगा। मैं अपनी हार्दिक शुभकामनायें इस संगोष्ठी के सफलतम आयोजन हेतु समर्पित करता हूँ।

ज.य.कृष्ण

(जय कृष्ण)

डा० भरत सिंह
भू0 पू0 कुलपति
रूड़की विश्वविद्यालय

57/1 सिविल लाईन्स
रूड़की-247 667

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की पावन नगरी हरिद्वार के समीप स्थित मनोरम शहर रूड़की में राजभाषा हिन्दी को माध्यम रखते हुए **''जलविज्ञान एवं जल संसाधन''** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में हमारा ध्यान जल के महत्व, उपयोग एवं इसके उचित प्रबन्धन की तरफ गया है। अब यह महसूस होने लगा है कि कभी न समाप्त होने वाला यह प्राकृतिक संसाधन भी कभी समुचित प्रबंधन एवं विकास के बिना वरदान की जगह अभिशाप बन जाता है।

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है इसकी जलविज्ञानीय समस्यायें स्थान के अनुसार बदलती रहती है। सूखा एवं बाढ़ हमारे लिए कोई नये शब्द नहीं हैं। यह सौभाग्य की बात है कि प्रकृति की इस अनुपम देन ''जल'' के यथेष्ट भंडार हमारे देश में उपलब्ध है। परन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नयी-नयी तकनीकों एवं खोजों का उपयोग करते हुए इस संसाधन के महत्व, उपयोग एवं इसके प्रबंधन पर जोर दें।

मुझे खुशी है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने सही समय पर इस विषय पर राजभाषा में समस्त देश का ध्यान आकृष्ट किया है। मुझे आशा है कि इस संगोष्ठी के द्वारा हम जलविज्ञान के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं पर उचित विचार विमर्श कर उनके प्रभावी हल ढूंढने में सफल होगें।

मैं संगोष्ठी की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

भरत सिंह

(भरत सिंह)

Fax : (91) 01332-72742/73560
Tele : 72742(O) 72342 (R)
Telex : 0597-201 UOR-IN
Gram : UNIVERSITY
E.Mail : vc%rurkeu@sirnetd.ernet.in

पद्मश्री
डा0 हो0 च0 विश्वेश्वरय्या
कुलपति

रूड़की विश्वविद्यालय
रूड़की - 247 667

Padmashri
Dr. H. C. Visvesvaraya
Vice-Chancellor

University of Roorkee
Roorkee - 247667, India

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूडकी **"जलविज्ञान एवं जल संसाधन"** विषय पर राष्ट्रभाषा हिंदी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी करने जा रहा है। पुरातन समय से ही ये देश बाढ़ एवं सुखे जैसी गम्भीर समस्याओं से जूझता रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते नये आयामों का फायदा तभी है जब उनकी जानकारी आम जनता तक पहुंचे। मुझे उम्मीद है कि देश के अन्य शोध संस्थान भी इस सराहनीय प्रयास का अनुसरण करेंगे तथा अपने-अपने क्षेत्र में देश की वैज्ञानिक उपलब्धियों को आम जनता तक पहुचाएंगे।

मैं संगोष्ठी के आयोजकों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ तथा संगोष्ठी की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

(हो0 च0 विश्वेश्वरय्या)

ब्रिगेडियर हरि उनियाल
कमाण्डेंड
Brig Hari Uniyal
Commandant

Tele : Mil 01332/72461 - 4 221(O), 235 (R)
Civ 01332/71179

मुख्यालय
बंगाल इन्जीनियर ग्रुप और केन्द्र
रूड़की - 247 667
Headquarter
Bengal Engineer Group & Centre
Roorkee - 247 667

संदेश

जल हमारे जीवन का एक अभिन्न पहलू है। हमारे देश में मौसम के विभिन्न रूप अलग-अलग जगहों पर देखने को मिलते हैं। हर वर्ष देश के किसी हिस्से में बाढ़ का प्रकोप और कोई सूखे की चपेट में होता है। कहीं 12 महीने बर्फ जमी रहती है और कहीं 12 महीने गर्मी का माहौल रहता है। विश्व की सबसे ज्यादा बरसात वाला क्षेत्र भी हमारे देश में ही है तथा रेगिस्तान भी हमारे देश का एक पहलू है। मौसम की इतनी विविधता होते हुये यह स्वभाविक है कि इन क्षेत्रों की जलविज्ञानीय समस्यायें भी विभिन्न होंगी। आज के बदलते सामाजिक परिक्षेप में, आज की आवश्यकताओं को लक्ष्य में रखते हुए यह आवश्यक है कि हम भी जल के उपयोग के प्रति अपने दृष्टिकोण को विश्व के जलविज्ञान के क्षेत्र के विशेषज्ञों के नजरिये से देंखे। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी उपरोक्त दिशा में सही समय पर लिया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। इस संगोष्ठी के आयोजन से हमें इस विषय पर सभी के विचार जानने एंव सुनने का मौका मिलेगा।

मैं इस संगोष्ठी की सफलता की शुभकामना करता हूँ।

हरि उनियाल

(हरि उनियाल)

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

(जल संसाधन मंत्रालय के आधीन भारत सरकार की समिति)

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY

(A Govt. of India Society Under Ministry of Water Resources)

Tel. Off. : 01332 - 72106
Res. : 01332 - 72860
Telex : 0597-205 NIH-IN
Gram : JALVIGYAN
Fax : 91-1332-72123
E. Mail : NIHR @ SIRNETD.ERNET.IN

0 एस0 एम0 सेठ
देशक
r. S.M. SETH
irector

संदेश

मेरे लिए बड़े उत्साह एवं गौरव का विषय है कि राष्ट्रीय जलवविज्ञान संस्थान, रूड़की 15-16 दिसम्बर, 1995 को "**जलविज्ञान एवं जल संसाधन**" विषय पर राजभाषा हिन्दी में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कर रहा है।

भारत एक विशाल देश है। हमारे प्राकृतिक जल संसाधनों के आयोजन, प्रबन्धन, विकास एवं संरक्षण की आधुनिक तकनीकों को विकसित करने तथा उसे आम जनता तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य जन साधारण में जल संसाधन की विभिन्न समस्याओं के प्रति चेतना उत्पन्न करना है ताकि आम जनता जल संसाधन के महत्व को समझ सकें। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी का दूसरा मुख्य उद्देश्य जन साधारण को जल प्रबन्धन एवं नियोजन की विभिन्न तकनीकों की जानकारी से अवगत कराना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति तभी सम्भव है जब आदान-प्रदान की भाषा जन साधारण समझ सके। अत: संगोष्ठी का माध्यम राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी रखना इस दिशा में एक उचित कदम है। विश्व में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे स्पष्ट है कि अपनी भाषा में की गई वैज्ञानिक प्रगति देश के लिए अधिक लाभकारी होती है।

मैं संगोष्ठी की सफलता एवं इसके उद्दश्यों की प्राप्ति की शुभकामना करता हूँ।

(सौभाग्य मल सेठ)

सत्यमेव जयते

S. C. MARAK
CHIEF MINISTER
MEGHALAYA, SHILLONG
Ph.; Office - 224282, Resi. - 223922/226768

MESSAGE

I am happy to learn that the National Institute of Hydrology is organising a two-day national seminar/workshop on hydrology and water resources at Roorkee on December 15 and 16, 1995.

While lauding such efforts, I also wish to underscore the dangers posed by increasing water pollution and scarcity which is becoming widespread in this country.

I am sure that through discussions and adeliberations in such seminars our hydrologists and engineers would be able to suggest enduring solutions to the serious problems of floods, draught, water logging, receding ground water level etc. which seem to beset our country today.

(S. C. Marak)

संगोष्ठी के आयोजन हेतु समितियों का स्वरूप

राष्ट्रीय सलाहकार समिति

अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग
महानिदेशक, भारत मौसम विज्ञान विभाग
अध्यक्ष, केन्द्रीय भूजल बोर्ड
महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास एजेन्सी
आयुक्त (इन्दस), जल संसाधन मंत्रालय
संयुक्त सचिव (प्रशासन) ''
निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय
निदशक, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

कार्यकारिणी समिति (संस्थान के सदस्य)

डा. करन कुमार सिंह भाटिया
श्री बबन प्रसाद राय
श्री राजेश्वर मेहरोत्रा
डा. दिव्या
श्री मनमोहन कुमार गोयल
डा. अशोक कुमार केशरी
श्री पंकज गर्ग
श्री यतवीर सिंह

आयोजन समिति

डा. सौभाग्य मल सेठ, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
डा. रनवीर सिंह, रूड़की विश्वविद्यालय
डा. गोपाल चौहान, रूड़की विश्वविद्यालय
डा. योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरूण'', बी.एस.एम. कॉलेज
डा. युद्धवीर सिंह, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान
डा. करन कुमार सिंह भाटिया, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
श्री बबन प्रसाद राय, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
डा. दिव्या, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

तकनीकी समिति

डा. जी. एल. असावा, रूड़की विश्वविद्यालय
डा. एस. के. त्रिपाठी, रूड़की विश्वविद्यालय
डा. एन. के. गोयल, रूड़की विश्वविद्यालय
श्री बबन प्रसाद राय, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
श्री राजदेव सिंह, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

संगोष्ठी में विभिन्न व्यवस्थाओं हेतु समितियों का स्वरूप

(राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान)

1) परिवहन एवं स्वागत

1. श्री एस. के. मिश्रा, वैज्ञा. ''स''
2. श्री विजय कुमार, वैज्ञा. ''ब''
3. श्री तनवीर अहमद, व. शो. सहा.
4. श्री राजेश अग्रवाल, शो. सहा.
5. श्री पी. के. अग्रवाल, व. शो. सहा.
6. श्री राकेश गोयल, तक. ग्रेड-II

2) प्रकाशन

1. श्री राजदेव सिंह, वैज्ञा. ''ई''
2. श्री राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञा. ''स''
3. श्री राकेश कुमार, वैज्ञा. ''स''
4. श्री मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञा. ''स''
5. श्री मनोज कुमार जैन, वैज्ञा. ''ब''
6. श्री तिलक राज सपरा, तक. ग्रेड-II
7. श्री योगेश धामा, शो. सहा.

3) खान पान व्यवस्था

1. डा. भीष्म कुमार, वैज्ञा. ''ई''
2. श्री राकेश कुमार, वैज्ञा. ''स''
3. श्री यतवीर सिंह, व. शो. सहा.
4. श्री पंकज गर्ग, व. शो. सहा.
5. श्री एन. के. भटनागर, व. शो. सहा.
6. श्री राजीव गुप्ता, व. शो. सहा.

4) बैठक हाल, उद्घाटन एवं समापन समारोह

1. डा. एस. के. जैन, वैज्ञा. ''ई''
2. श्री राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञा. ''स''
3. श्री हेमन्त चौधरी, वैज्ञा. ''स''
4. श्री आदित्य त्यागी, वैज्ञा. ''स''
5. डा. अशोक कुमार केशरी, वैज्ञा. ''ब''
6. कनिष्ठ अभियन्ता (सिविल)
7. कनिष्ठ अभियन्ता (विद्युत)
8. श्री सुभाष किचलू, व. शो., सहा.

5) सांस्कृतिक कार्यक्रम

1. डा. बी. सोनी, वैज्ञा. ''ई''

6) स्मारिका

1. श्री एन. सी. घोष, वैज्ञा. ''स''
2. श्री एम. के. गोयल, वैज्ञा. ''स''
3. डा. ए. के. केशरी, वैज्ञा. ''ब''
4. श्री सुखदेव सिंह कवंर, प्रलेख अधिकारी

7) आवास

1. श्री बबन प्रसाद राय, वैज्ञा. ''ई''
2. श्री आदित्य त्यागी, वैज्ञा. ''स''
3. श्री यतवीर सिंह, व. शो. सहा.
4. श्री ओम प्रकाश, शो. सहा.
5. कनिष्ठ अभियन्ता (सिविल)
6. कैप्टन रघुवंशी, सुरक्षा अधिकारी
   केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की
7. डा. एम. पेरूमल, अनवरत शिक्षा विभाग
   रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की

8) रजिस्ट्रेशन

1. डा. बी. सोनी, वैज्ञा. ''ई''
2. डा. सी. के. जैन, वैज्ञा. ''स''
3. श्री नरेश कुमार, व. शो. सहा.
4. श्रीमती बबीता शर्मा, क. शो. सहा.
5. कु. सोनिया बख्शी, क. शो. सहा.

9) प्रचार

1. श्री बबन प्रसाद राय, वैज्ञा. ''ई''
2. श्री राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञा. ''स''
3. श्री एम. के. गोयल, वैज्ञा. ''स''
4. श्री तिलकराज सपरा, तक. ग्रेड-I
5. श्री रामकुमार, आशु.

10) संभाषण एवं आतिथ्य

1. डा. के. एस. रामाशास्त्री, वैज्ञा. ''एफ''
2. श्री राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञा. ''स''
3. श्री एम. के. गोयल, वैज्ञा. ''स''

11) राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान गतिविधियाँ एवं दर्शन

1. डा. के. एस. रामाशास्त्री, वैज्ञा. ''एफ''
2. डा. ए. बी. प्लानीअप्पन, वैज्ञा. ''ई''
3. डा. भीष्म कुमार, वैज्ञा. ''ई''
4. डा. वी. के. चोबे, वैज्ञा. ''ई''

12) टंकण कार्य

1. श्री राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञा. ''स''
2. श्री महेन्द्र सिंह, आशु. (हिन्दी)
3. श्री दयाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक
4. श्री दौलत राम, आशु. (हिन्दी)

रूड़की

भारवर्ष की उत्तरी सीमा पर एक अडिग अचल प्रहरी के रूप में स्थित हिमालय पर्वत की श्रृंखलाऐं अपनी अनुपम नैसर्गिक छटा बिखेरती हुई, सदा से प्राकृतिक संपदा और ज्ञान के भंडार का प्रतीक रही है। इसी की तलहटी में बसा एक खुबसूरत शहर है रूड़की। उत्तर प्रदेश के इस नगर का प्राकृतिक वैभव अद्वितीय है। रूड़की शहर के पश्चिम में प्रदायनी यमुना प्रवाहित होती है और पूर्व में मोक्ष प्रदायनी गंगा। रूड़की से नन्दा देवी, केदारनाथ आदि की गगन चुम्बी चोटियाँ स्पष्ट दिखाई देती है। रूड़की नगर के मध्य से गुजरती गंगा नहर इस शहर को दो भागों में बाँटती है जिसमें पश्चिमी किनारे पर पुराना नगर, उत्तर प्रदेश सिंचाई अनुसंधान संस्थान तथा सिंचाई परिकल्प संगठन स्थित है और पूर्वी किनारे पर रूड़की विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, उत्तर प्रदेश राजकीय उद्योगशाला तथा बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप स्थित है। तकनीकी विद्या की इस प्राचीन नगरी में स्थित ये तकनीकी संस्थाऐं देश व पड़ोसी देशों की विकास परियोजना के अभिकल्प, प्रौद्योगिकी, परामर्श, कार्य संचालन, तकनीकी प्रशिक्षण एवं हस्तांतरण आदि में समर्पित भाव से संलग्न हैं।

रूड़की, अमृतसर - हावड़ा तथा देहरादून - बम्बई मुख्य रेलवे लाइन पर स्थित है। यहाँ से हरिद्वार, देहरादून, मसूरी, नैनीताल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आगरा और मथुरा के लिए सीधी सड़क सुविधाऐं उपलब्ध है। हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थल हरिद्वार, जहाँ से पवित्र गंगा पर्वतों से अठखेलियाँ करती शान्त मन से मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है, यहाँ से मात्र 30 किमी. दूरी पर स्थित है। यह शहर हरिद्वार (30 किमी.) एवं ऋषिकेश (66 किमी.) जैसे तीर्थ स्थलों तथा देहरादून (60 किमी.) एवं मसूरी (100 किमी.) जैसे पर्यटन स्थलों का प्रवेश द्वार है। मनोरम शहर के साथ-साथ रूड़की शहर की जलवायु एवं वातावरण भी काफी लुभावना है।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

पावन नगरी हरिद्वार के समीप बसी मनोरम शहर रूड़की में स्थित राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान अनुसंधान और विकास का एक जीवन्त मन्दिर है। इस संस्थान की स्थापना भारत सरकार द्वारा 16 दिसम्बर, 1978 को जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत एक स्वायत्त संस्था के रूप में की गई थी। अपने स्थापना काल से ही यह संस्थान देश के विभिन्न भागों की जलविज्ञानीय समस्याओं और जल संसाधनों के समुचित योजनीकरण, विकास, उपयोग एवं प्रबन्धन के लिए अपनी समस्त सेवाऐं समर्पित करता आ रहा है। आज यह संस्थान जलविज्ञान के क्षेत्र में एक शीर्ष संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य जलविज्ञान एवं जल संसाधन के विभिन्न विधाओं के विभिन्न पहलुओं पर मूलभूत एवं व्यवहारिक शोध करने के साथ-साथ जलविज्ञान से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिक कार्यो को बढ़ावा देना, सुव्यवस्थित रूप से इसका समन्वय करना, तकनीकी सहायता एवं तकनीक हस्तांतरण करना है। इसके अतिरिक्त यह संस्थान सरकारी, एवं अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं को जलविज्ञानीय शोध एवं परामर्श के विस्तृत क्षेत्र में तकनीकी सेवाऐं उपलब्ध कराता है तथा जल संरक्षण, जल प्रबंधन एवं जल-प्रदूषण के प्रति आम जनता में जागरूकता पैदा करता है। विगत सत्रह वर्षों में इस संस्थान ने जलविज्ञान के परम्परागत और नवीनतम् पुनरूदय्मान् विधाओं में सराहनीय योगदान दिया है। विषय विषयक अध्ययनों, संगणकीय अनुप्रयोंगों और सुदूर संवेदन, नाभिकीय जलविज्ञान, एवं जलविज्ञानीय मापयंत्रण जैसी नई विधाओं में अनुसंधान के सहारे इस संस्थान ने आज अपनी एक अलग पहचान बना ली है।

देश के विभिन्न भागों में स्थलाकृतिक, जलवायु, भूगर्भविज्ञान, मृदा, जलनिकास की विशेषताऐं, भूमि उपयोग एवं वनस्पति आवरण में भिन्नता के कारण विभिन्न क्षेत्रों की जलविज्ञानीय समस्याऐं भी भिन्न-भिन्न हैं। इसलिए विभिन्न क्षेत्रों की जलविज्ञानीय समस्याओं के निराकरण के लिए तथा राज्यों के साथ प्रभावी तालमेल के उद्देश्य से संस्थान ने छः क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किये हैं। ये केन्द्र हैं: (1) दक्षिण का कठोर शिला क्षेत्र केन्द्र, बेलगांव, (2) पश्चिमी हिमालय क्षेत्रीय केन्द्र, जम्मु, (3) उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी, (4) गंगा मैदानी क्षेत्रीय केन्द्र (I), पटना, (5) पूर्वी समुद्र तटीय और डेल्टाई क्षेत्रीय केन्द्र, काकीनाड़ा, और (6) गंगा मैदानी क्षेत्रीय केंन्द्र (II), सागर। इसके अलावा दो और क्षेत्रीय केन्द्रों : (1) शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रीय केन्द्र, उदयपुर, एवं (2) पश्चिमी समुद्र तटीय क्षेत्रीय केन्द्र, गोवा की स्थापना करने का प्रस्ताव है।

उद्देश्य

- जलविज्ञान के सभी पहलुओं से संबंधित मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त वैज्ञानिक कार्य करना, इसमें सहायता प्रदान करना, वैज्ञानिक कार्यों को बढ़ावा देना तथा सुव्यवस्थित रूप से समन्वय करना

- जलविज्ञान के क्षेत्र में अन्य राष्ट्रीय, विदेशी तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग एवं समन्वय करना

- परामर्शी और प्रायोजित परियोजनाओं का कार्य करना एंव तकनीक हस्तांतरण हेतु कार्यशाला, प्रशिक्षण पाठयक्रम और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठीओं एवं परिसंवादों का आयोजन करना

- समिति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक अनुसंधान एवं संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना एवं उसका अनुरक्षण करना तथा उसमें पुस्तकें, समीक्षा व पत्रिकाएं तथा अन्य उपयोगी प्रकाशन उपलब्ध कराना।

- वे सभी कार्य करना जिन्हें समिति आवश्यक समझती है तथा जो संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रासंगिक अथवा प्रेरक है।

स्वरूप और सुविधाऐं

जलविज्ञान के अलग-अलग विधाओं में किये जा रहे शोध एवं विकास सम्बन्धी कार्यकलापों को सुव्यवस्थित और समन्वित रूप से निस्पादन करने के लिए संस्थान को 17 वैज्ञानिक प्रभागों में विभाजित किया गया है। ये प्रभाग निम्न हैं:

1. जलविज्ञानीय अभिकल्प
2. भूपृष्ठ जल विश्लेषण एवं निर्दशन
3. बाढ़ अध्ययन
4. पर्वतीय जलविज्ञान
5. भूजल आंकलन
6. भूजल निदर्शन एवं संयुग्मी उपयोग
7. सूखा अध्ययन
8. जल निकास
9. जल संसाधन तंत्र
10. पर्यावरणीय जलविज्ञान
11. वायुमण्डलीय भूपृष्ठ निर्दशन
12. झील जलविज्ञान
13. नाभिकीय जलविज्ञान
14. जलविज्ञानीय अन्वेषण
15. जलविज्ञानीय मापयंत्रण
16. जलविज्ञानीय सूचना तंत्र
17. सुदूर संवेदी अनुप्रयोग

इसके अतिरिक्त संस्थान की अनुसंधान एवं विकास कार्यों की गतिविधियाँ क्षेत्रीय केंद्रो से भी संचालित होती है। क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यों का समन्वयन संस्थान के मुख्यालय से होता है। विभिन्न विधाओं में शोध अध्ययन हेतु संस्थान में कुल 60 सुशिक्षित एवं प्रशिक्षित वैज्ञानिक हैं, जिनमें से करीबन एक चौथाई पी. एच. डी. और तीन चौथाई एम. ई./एम. टेक. की योग्यता रखते हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान के विभिन्न कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए वैज्ञानिकी, तकनीकी और प्रशासनिक स्टॉफ हैं।

प्रयोगात्मक, विषय विषयक अध्ययनों, जलविज्ञान अन्वेषण तथा परम्परागत एवं उच्च तकनीक के अनुप्रयोगी अनुसंधान कार्यों के लिए संस्थान में सुदूर संवेदन, जल गुणता, मृदा और भूजल, नाभिकीय अनुप्रयोग, जलविज्ञानीय मापयंत्रण और जलविज्ञानीय अन्वेषण प्रयोगशालाऐं स्थापित हैं। ये सभी प्रयोगशालाऐं आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित हैं। संगणकीय कार्यों के लिए संस्थान में एक VAX-11/780 संगणक प्रणाली, VAX वर्कस्टेशन 3200, डिजिटाइजर और अनेक 486 एवं 386 वैयाक्तिक संगणक की सुविधाऐं है। इसके अतिरिक्त संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र संगणकीय, प्रयोगात्मक और फील्ड अध्ययनों को क्रियान्वयन करने के लिए सभी सुविकसित उपकरणों, सुविधाओं और प्रयोगशालों से सुसज्जित है। संस्थान के कैम्पस में एक स्वचालित जलविज्ञानीय केन्द्र भी है जो 1990 से कार्य कर रहा है। यह केन्द्र जलविज्ञानीय और मौसमीय पैरामीटरों का निरन्तर मापन कर सकता है। संस्थान के पास एक उत्कृष्ट तकनीकी पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में जलविज्ञान एवं जल संसाधनों तथा कम्प्यूटर और इलेक्ट्रॉनिकी के विविध विषयों पर 7603 पुस्तकें उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त अन्य संगठनों के 3043 तकनीकी प्रतिवेदन तथा तकनीकी पत्र, 442 प्रलेखित संगणक प्रोग्राम, 1975 मानचित्र, 41 माईक्रोफिश एवं 305 भारतीय तथा विदेशी मानक उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में 34 भारतीय जर्नल और 40 विदेशी जर्नल निरन्तर मंगाए जा रहे हैं। संस्थान को डी. ए. एन. आई. डी. ए., डब्लू. ए. एम. ए. टी. आर. ए. और यू. एन. डी. पी. जैसी परियोजनाओं के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त होने का गौरव भी मिला है।

परामर्श सामर्थ्य

यह संस्थान जलविज्ञान और जल संसाधन के विभिन्न समस्याओं के निराकरण तथा जल संसाधनों के समुचित विकास एवं प्रबंधन के लिए नीतियों का निर्धारण एवं मूल्यांकन और अन्य पहलुओं में तकनीकी परामर्श देने में सक्षम है। विगत वर्षों में संस्थान ने अपने वैज्ञानिक प्रभागों के सतत प्रयास से विविध प्रकार के परामर्शी एवं प्रायोजित परियोजानाओं के लिए आवश्यक तकनीक विकसित कर ली है और आवश्यक उपकरण एवं सुविधाऐं भी अर्जित कर ली है। यह संस्थान निम्न विषयों में तकनीकी परामर्श देने में सक्षम है:

- परियोजना जलविज्ञान
- जलविज्ञानीय निर्दशन
- भूजल निर्दशन

- सुदूर संवेदन तथा जी. आई. एस. अनुप्रयोग
- नाभिकीय अनुप्रयोग
- जल गुणवत्ता विश्लेषण और निर्दशन
- जलाशय प्रचालन
- जल लग्नता और लवणता
- हिम जलविज्ञान
- अभिकल्प बाढ़ आकलन
- बाढ़ नियंत्रण एवं प्रबंधन
- जल उपलब्धता अध्ययन
- सतही जल और भूजल की पारस्परिक क्रियाओं का अध्ययन
- झील जलविज्ञान
- पेय जल उपलब्धता अध्ययन
- जलविज्ञानीय मापयंत्रों का विकास
- खान का जलविज्ञानीय अध्ययन
- सार्वभौमिकीय जलविज्ञान
- जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव
- जल विकास अभिकल्पन
- सतही एवं भूजल प्रबंधन
- पहाड़ी क्षेत्रों में लघु जलविद्युत परियोजनाओं के परम्परागत ऊर्जा का इष्टतम विकास
- जल संसाधन परियोजनाओं के लिए कम खर्चीली अभिकल्पन
- सूखा अध्ययन
- मृदा क्षय आंकलन

यह संस्थान अब तक 15 परामर्शी परियोजनाओं का अनुसंधान कार्य पूर्ण कर चुका है और 10 परियोजनाओं का अनुसंधान कार्य जारी है। मच्छु और धरोई परियोजनाओं के लिए जलाशय प्रचालन की नीतियों का निर्धारण, झमार कोटरा खानों में जलविज्ञानीय अध्ययन, नैनी झील का जलविज्ञानीय अध्ययन, चिनाव व गंगा नदियों में हिम एवं हिमनद गलन योगदान का अध्ययन, गंगा नदी के लिए नरोरा से कानपुर तक सतही जल एवं भूजल की परस्पर क्रिया का अध्ययन, इंदिरा गाँधी नहर परियोजना के द्वितीय चरण नियंत्रण क्षेत्र के जलीय बंधन युक्त भाग में सिंचाई अनुप्रयोग के प्रभाव का निर्धारण एवं अपसतही जल निकास अन्वेषण, उत्तर प्रदेश के चमोली एवं उत्तरकाशी जिलो में सुदूर संवेदन तकनीकों द्वारा भू-स्खलन बहुल क्षेत्रों का पता लगाना, तथा जलविज्ञानीय उपकरणों जैसे भारात्मक वर्षा नाप, लोड सेल उपयोगित जल तुल्य संवेदक, इलेक्ट्रॉनिक अन्त: स्यंदन मापक, माइक्रोप्रोसेसर नियंत्रक आधारित आँकड़ा लॉगर, शाफ्ट इनकोडर आधारित जल स्तर/स्टेज मापक आदि संस्थान की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।

तकनीकी कार्यों के अलावा संस्थान जल की महत्ता, जल की मात्रा एवं गुणता का संरक्षण, जल का समुचित उपयोग एवं प्रबंधन के प्रति मानव की उत्तरदायित्वों को आम जनता के पास पहूँचाने के लिए भी कटिबद्ध है। राष्ट्रीय भाषा की प्रोन्नति एवं तकनीकी अनुसंधानों को जन साधारण की भाषा में आम जनता तक पहुँचाने में इस संस्थान का सराहनीय योगदान रहा है। बहुभाषी हाइड्रोलोजिक टर्मिनोलोजी, द्विभाषी जेबी शब्द कोश जैसी पुस्तकों का प्रकाशन और 15-16 दिसम्बर, 1995 को **जलविज्ञान एवं जल संसाधन** विषय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी इस दिशा में उठाया गया कदम है। प्राचीन भारत में जलविज्ञान (हाइड्रोलोजी एन एन्सिएन्ट इंडिया) और हाइड्रोलोजिकल डेवलेपमेन्ट इन इंडिया सिन्स इंडिपेन्डेन्स जैसी पुस्तकों का प्रकाशन राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहा गया है। संस्थान प्रोत्साहन देने के लिए व्यवहारिक एवं मूलभूत जलविज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यों पर राष्ट्रीय जलविज्ञान एवं भरत सिंह पुरस्कार प्रदान करता है। संस्थान भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञानीय समिति और जलविज्ञान पर एशियन क्षेत्रीय समन्वयं समिति के लिए सचिवालय के रूप में भी कार्य करता है।

संस्थान ने अपने वैज्ञानिकों के सतत् प्रयास से जलविज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान बना ली है। आज यह संस्थान अपने अनुसंधान एवं विकास कार्यों के द्वारा राष्ट्र में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जलविज्ञान के क्षेत्र में एक प्रमुख शोध संस्थान के रूप में विख्यात है एवं देश की जलविज्ञान से संबंधित जटिल समस्याओं के निदान और जलविज्ञान में क्षेत्र में उच्च तकनीक विकसित करने के लिए कृत संकल्प एवं सतत् प्रयासरत् है।

भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति

वर्ष 1965 से 1974 तक यूनेस्को द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जलविज्ञान दशक कार्यक्रम चलाया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य प्रेक्षण तंत्र में सुधार द्वारा जलविज्ञान के सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करना तथा राष्ट्रीय योजना हेतु जल संसाधन का अधिक प्रमाणिक रूप से पता लगाना था। इस कार्यक्रम के समाप्त होने पर यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय जलविज्ञान कार्यक्रम के अन्तर्गत गतिविधियों को जारी रखा। भारत सरकार ने आई. एच. पी. के लिए एक स्थाई राष्ट्रीय समिति का गठन किया जिसका सचिवालय विज्ञान एवं तकनीकी विभाग (डी. एस. टी.) में रखा गया। वर्ष 1982 में इस समिति का कार्य सिंचाई मंत्रालय के अधीन चला गया तथा इसका नाम बदलकर जलविज्ञान पर उच्च स्तरीय तकनीकी समिति (हिलटेक) रखा गया। हिलटैक का सचिवालय राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की के प्रशासनिक नियन्त्रण में रखा गया। हिलटैक की व्यापक एवं विस्तृत गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए जल संसाधन मंत्रालय ने इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय जलविज्ञान समिति (इनकोह) कर दिया। जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 1994 में इनकोह का पुनर्गठन किया है। इसमें अध्यक्ष एवं सचिव सहित कुल 21 सदस्य हैं।

इनकोह के कुछ प्रमुख उद्देश्य है : केन्द्र एवं राज्य सरकारों को जलविज्ञान सम्बन्धी विषयों में उचित सलाह देना, विशिष्ट समस्याओं के निदान हेतु विशेषज्ञ नियुक्त करना, जलविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में स्टेट-ऑफ-आर्ट रिपोर्ट तैयार करना एवं आधुनिकतम जानकारी का प्रसार करना, जलविज्ञानीय अनुसंधान संस्थानों के विकास के लिए वित्तीयकरण की संस्तुति करना, विभिन्न संस्थानों की अनुसंधान गतिविधियों में समन्वय रखना, उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन हेतु संस्तुति करना, तुरन्त ध्यान देने योग्य क्षेत्रों की पहचान करना, तकनीकी विकास हेतु स्वदेशी उद्योगों को ऋण के द्वारा प्रोत्साहित करना, अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भारत की भागीदारी एवं सहयोग में वृद्धि करना, जलविज्ञान में परिसंवादों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करना।

इन्कोह की एक प्रमुख गतिविधी हर वर्ष जलविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी करना है। ये संगोष्ठी सन् 1988 में प्रथम बार रुड़की में आयोजित की गई थी। इसके बाद राष्ट्रीय संगोष्ठियां जम्मू, पूना, मद्रास, पटना, शिलांग एवं सातवीं एवं अन्तिम 1995 में जयपुर में आयोजित की गई थी।

अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं जलविज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का प्रचार करने के लिए इन्कोह में दो पैनल एवं तीन समितियां हैं। जलविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में गतिविधियों को कार्यान्वित करने के लिए दो विशेषज्ञ पैनल बनाए गये है :

1. सतही जल एवं जल संसाधन पैनल
2. भूजल एवं जल गुणवत्ता पैनल

इनकोह के विभिन्न कार्यों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने के लिए इनकोह में निम्न तीन समितियों का गठन किया गया है :

1. संचालन समिति
2. अनुसंधान समिति
3. संपादकीय सलाहकार उप समिति

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की में स्थित इनकोह का सचिवालय केन्द्रीय जल आयोग के साथ निकट सम्पर्क बनाए रखता हैं क्योंकि आयोग के अध्यक्ष इनकोह के भी अध्यक्ष हैं। इनकोह की गतिविधियों के लिए अलग से कोई वित्तीय बजट निर्धारित न होने के कारण इसके सभी व्यय राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के नियमित बजट से ही पूर्ण किये जाते हैं।

इन्कोह सचिवालय, आरकोह (जलविज्ञान की एशियाई क्षेत्रीय समन्वय समिति) सचिवालय के कार्यों का दायित्व भी निभाता है। यह सचिवालय पिछले आठ वर्षों से एक त्रैमासिक समाचार पत्रिका प्राकाशित कर रहा है। इस समाचार पत्रिका में क्षेत्र में होने वाली जलवैज्ञानिक गतिविधियों संबंधी समाचार तथा सदस्य देशों की गतिविधयों के समाचार प्रकाशित होते हैं। इस समाचार पत्रिका में विविध अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/संगोष्ठियों/परिगोष्ठियों एवं पाठ्यक्रमों आदि के विषय में सूचना भी प्रकाशित होती है। किसी सीमा तक, जलविज्ञान में होने वाले नवीन अनुसंधानों एवं नवीन प्रकाशनों को इस समाचार पत्रिका में सूचीबद्ध भी किया जाता है। इस समाचार पत्रिका को क्षेत्र के सभी सदस्य देशों (इंडोनेशिया, जापान, कोरिया गणतंत्र, डी. पी. आर. कोरिया, चीन, मलेशिया, पपुआ न्यू गिनी, फिलीपीन्स, थाइलैंड, बंगलादेश, बर्मा, अफगानिस्तान, ईरान, मालदीव, भारत, नेपाल, मंगोलिया, श्रीलंका, पाकिस्तान, भूटान) की जलविज्ञान की राष्ट्रीय समितियों में तथा देश-विदेश के 600 अन्य पतों पर वितरित किया जाता है।

रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की

रूड़की विश्वविद्यालय अभियांत्रिकी शिक्षा का एक जीवन्त मन्दिर है। इसकी समस्त सेवाएं राष्ट्र कल्याण के लिए वर्ष 1847 से निरन्तर समर्पित है। इस शिक्षा मंदिर की पूर्ववर्ती संस्था थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग की स्थापना गंगा नहर के निर्माण तथा रख-रखाव के लिए हुई थी। इस शिक्षा संस्थान की विशिष्ट सेवाओं का मूल्याकंन कर नवम्बर 1949 में इसको स्वतंत्र भारत का प्रथम तकनीकी विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ। अपने तीन मूल विभागों-जानपद, विद्युत तथा यांत्रिकी अभियांत्रिकी से विकसित होकर आज यह विश्वविद्यालय अभूतपूर्व उन्नति कर रहा है। आज इसमें 17 शैक्षिक विभाग 6 अन्य इकाई और 13 शोध केन्द्र है। अपने विशिष्ट अभिस्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध कार्यक्रमों से इस विश्वविद्यालय ने समूचे राष्ट्र में अपनी अलग ही पहचान बना ली है। सामान्य शिक्षण के अतिरिक्त सरकारी, अर्द्ध-सरकारी, गैर सरकारी एवं निजी क्षेत्र की संस्थाओं को शोध और परामर्श के विस्तृत क्षेत्र में शिक्षक वर्ग की तकनीकी सेवाएं उपलब्ध है। विज्ञान एवं प्राद्योगिकी के क्षेत्र में विभिन्न संकायों के अनेक शिक्षकों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया गया है। अपने स्थापना काल से ही इस संस्थान ने देश में तकनीकी शक्ति के विकास की दिशा में अपूर्व योगदान दिया है।

इस विश्वविद्यालय में लगभग 1500 अभिस्नातक छात्र और लगभग इतनी ही संख्या में स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र हैं। इनमें विदेशी छात्रों की संख्या लगभग दस प्रतिशत है जिनमें से अधिकतर निकटवर्ती पड़ोसी एशियाई और अफ्रीकी देशों के निवासी हैं। इन देशों में अफगानिस्तान, इंडोनशिया, इथोपिया, ईरान, ईराक, उगाण्डा, केन्या, घाना, तंजानिया, थाइलैण्ड, नाइजीरिया, नेपाल, फिलीपीन, फीजी, बर्मा, बंगला देश, मलेशिया, मॉरिशस, मिस्र, वियतनाम, सीरिया, सूडान और संयुक्त अरब अमीरात विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस संस्थान द्वारा विभिन्न पाठयक्रमों के अंतर्गत अभियांत्रिकी के विभिन्न विभागों में बी. ई, एम. टेक. और पी. एच. डी. की डिग्रीयाँ दी जाती है। अभियांत्रिकी विषयों के अलावा विज्ञान के विभिन्न विषयों में भी संस्थान के द्वारा एम. एस. सी., एम. टेक, एम. फिल. और पी. एच. डी. की डिग्री प्रदान की जाती है। इस संस्थान की विभिन्न इकाईयाँ निम्न हैं:

शैक्षिक विभाग

कागज प्रौद्योगिकी संस्थान	इलेक्ट्रॉनिकी एवम् कप्म्यूटर अभियांत्रिकी विभाग
गणित विभाग	जल ऊर्जा विभाग
जल संसाधन विकास प्रशिक्षण केन्द्र	जानपद अभियांत्रिकी विभाग
जैव विज्ञान एवं जैव तकनीकी विभाग	धातुकर्मीय अभियांत्रिकी विभाग
भूकम्प अभियांत्रिकी विभाग	भौतिक विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग	यांत्रिकी एवं औद्योगिकी अभियांत्रिकी विभाग
वास्तुकला एवं नियोजन	भूविज्ञान विभाग
रसायन विज्ञान विभाग	रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग	

अन्य केन्द्र

अनवरत शिक्षा विभाग
श्रव्य दृश्य अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय विज्ञान उपकरण केन्द्र
गुण अभिवृद्धि कार्यक्रम केन्द्र
वैकल्पिक जल ऊर्जा केन्द्र
क्षेत्रीय संगणक केन्द्र

शोध केन्द्र

कम्प्यूटर एडेड डिजाइन एवं मैन्यूफैक्चरिंग केन्द्र
कम्प्यूटर विज्ञान एवं तकनीकी केन्द्र
पवन अभियांत्रिकी केन्द्र
पर्यावरण अभियांत्रिकी केन्द्र
यंत्रीकरण केन्द्र
माइक्रोप्रोसेसर अनुप्रयोग केन्द्र
सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिकी केन्द्र
जलविज्ञान केन्द्र
जल संसाधन प्रबन्धन केन्द्र
जीव रूपान्तरण केन्द्र
नदीय जल केन्द्र
परिवहन अभियांत्रिकी केन्द्र
सुदूर संवेदन केन्द्र

संस्थान के क्षेत्रीय संगणक केन्द्र में आधुनिक, उच्च तकनीकी एवं द्रुत गति पर आधारित डेक 2050 संगणक प्रकम उपंयत्रों सहित शोध को नई दिशा प्रदान कर रहा है। विश्वविद्यालय विज्ञान उपकरण केन्द्र शोधकर्ताओं को अत्याधुनिक संवेदनशील उपकरणों की सेवाऐं प्रदान करता है। उच्च शिक्षा एवं शोध विषयक टेली फिल्मों का निर्माण कर राष्ट्रीय प्रसारण द्वारा छात्रों को शिक्षा देना संस्थान में स्थापित श्रव्य दृश्य अनुसंधान केन्द्र का प्रमुख उद्देश्य है। संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय में अभियांत्रिकी, विज्ञान एवं साहित्य विषय के लगभग सवा दो लाख पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं और प्रतिवेदनों का संग्रह उपलब्ध है। यहाँ लगभग 700 देशी एवं विदेशी पत्रिकाऐं प्रति वर्ष मंगाई जाती है। सस्थान में स्थापित सभी प्रयोगशालाऐं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है।

विश्वविद्यालय के तत्वाधान में विज्ञान तथा तकनीकी उद्यमी पार्क की स्थापना की गई है। जिसमें इलेक्ट्रॉनिकी, संगणक, सर्वे उपकरण एवं यांत्रिकी उपकरणों से संबंधित उद्यमियों को तकनीकी परामर्श उपलब्ध कराया जाता है। इस योजना के अंतर्गत नव-स्नातकों और वैज्ञानिकों को अपने-अपने उद्योग-धन्धे स्थापित करने की दिशा में प्रोत्साहित करके औद्योगिक विकास को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश परिषद के सहयोग से गुणवत्ता परीक्षण एवं अनुसंधान हेतु एक विशिष्ट सेवा स्थापित की गई है। इसके अंतर्गत विशिष्ट मीटरों का सत्यापन और अन्य आधुनिक उपकरणों के परीक्षण एवं विकास को नई दिशा मिलती है। नव स्थापित माइक्रोप्रोसेसर केन्द्र, कैड-कैम केन्द्र व अन्य शोध केन्द्र देश की औद्योगिक प्रगति में अपना समुचित योगदान देने के लिए कृत संकल्प है। इसके अतिरिक्त छात्रों के चहुमुखी प्रतिभा के विकास हेतु खेल कूद एवं मनोरंजन की अनेक आधुनिकतम सुविधाऐं संस्थान में उपलब्ध है।

यह विश्वविद्यालय अपने विभिन्न संकायों एवं केन्द्रों के सतत प्रयासों से अभियांत्रिकी के क्षेत्र में काफी ख्याती प्राप्त की है। औद्योगिकी एवं तकनीकी क्षेत्र की समस्याओं के समाधान में इस विश्वविद्यालय का अपूर्व योगदान रहा है। विश्वविद्यालय न केवल अपनी परम्परा को कायम रखने के लिए कृत संकल्प है वरन् नई शैक्षिक एवं शोध केन्द्रों के द्रुत विकास के द्वारा चौमुखी विकास के लिए सतत प्रयासरत् भी है।

जलविज्ञान विभाग, रुड़की

वर्ष 1965 में यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय जलविज्ञान का शुभारम्भ किया। इस कार्य क्रम के अन्तर्गत जलविज्ञान के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं शिक्षण को एक मुख्य मुद्दे के रूप में अपनाया गया था। अन्तत: वर्ष 1965 से 1974 की अवधि के दौरान विश्व भर में कई अन्तर्राष्ट्रीय स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रमों की स्थापना जलविज्ञान के क्षेत्र में की गई। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत सन् 1972 में रूड़की विश्वविद्यालय में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम जलविज्ञान के क्षेत्र में स्कूल ऑफ हाइड्रोलोजी के तत्वाधान में प्रारम्भ किया गया जो कि विकासशील देशों में स्थापित किया जाने वाला पहला पाठ्यक्रम था। आज यह पाठ्यक्रम यूनेस्को एवं भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एशिया तथा अफ्रीका महाद्वीप के अनेकों विकासशील देशों के इंजीनियरों तथा वैज्ञानिकों को ट्रेनिंग प्रदान करना है, जिससे कि वह समुचित प्रशिक्षण पा सकें एवं जलविज्ञान के क्षेत्र में आकड़ा संग्रह को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर सकें। फलस्वरूप, इसका उपयोग समग्रता के आधार पर जल संरक्षण एवं उपयोग हेतु भली प्रकार किया जा सके। वर्ष 1994 तक आयोजित किये गये पाठ्यक्रमों में 531 प्रशिक्षार्थियों ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में भाग लिया। इनमें से 202 प्रशिक्षार्थी 32 देशों से सम्मिलित हुए। विभाग ने यूनेस्को, यू. एन. डी. पी. तथा भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदानों से कई आधुनिक उपकरणों को प्राप्त किया । यूनेस्को, यू. एन. डी. पी. तथा फोर्ड फाउन्डेशन से प्राप्त अनुदानों के द्वारा अनेक प्रमुख वैज्ञानिकों एवं जलविज्ञान से संबंधित तकनीकी विदों को व्याख्यान एवं परामर्श योजनाओं में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया। इस पाठयक्रम को स्थापित करने के लिए रूड़की विश्वविद्यालय, जो कि पहले थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग के नाम से विश्वविख्यात रहा है, को चुने जाने का मुख्य कारण यह है कि यहाँ सिंचाई एंव जल ससांधन के क्षेत्र में न केवल एक पुरानी निष्ठा एवं विरासत रही है, वरन् इस रूड़की नगर के मध्य कई शोध संस्थान भी स्थित है जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार के सिंचाई अनुसंधान संस्थान का नाम विशेष है।

प्रशिक्षण हेतु जलविज्ञान विभाग में निम्न पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं:

1. एक वर्षीय अवधि का स्नातकोत्तर डिप्लोमा (जलविज्ञान) जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित विशिष्ट योग्यताओं का प्रावधान है:
   (अ) भू-पृष्ठीय जलविज्ञान
   (ब) भू-जल
   (स) जल ग्रहण क्षेत्र प्रबन्ध

2. स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम (स्नातकोत्तर डिप्लोमा की सफलता पूर्वक समाप्ति के उपरान्त 4 माह 15 दिनों की अतिरिक्त अवधि) के अर्न्तगत निम्नलिखित दो विकल्पों का प्रावधान है:
   (अ) स्नातकोत्तर डिग्री (प्रबन्ध) (डिजरटेशन के माध्यम से)
   (ब) स्नातकोत्तर डिग्री (कोर्स वर्क के आधार पर)

3. जलविज्ञान के क्षेत्र में शोध-प्री. एच. डी. की उपाधि हेतु विभाग ने पच्चीस से अधिक प्रोजेक्टस का प्रारूप दिया है। अन्र्तविभागीय शोध प्रोजेक्टों में भी विभागीय संकाय ने प्रमुख रूप से भाग लिया है।

जलविज्ञान विभाग ने बाढ़ विषयक तथा जल गुण से सम्बन्धित विभिन्न शोध क्षेत्रों में प्रमुख रूप से भाग लिया। गंगा जल तथा हिण्डन नदी की जलगुणवत्ता से सम्बधित शोध प्रोजेक्टों में विभागीय योगदान प्रमुख रहा है। विभाग में 12 पी. एच. डी. से सम्बन्धित शोध प्रबन्ध पूर्ण किये गए हैं। इन शोध कार्यो के लिए पी. एच. डी. की उपाधि रुड़की विश्वविद्यालय से प्रदान की जाती है।

जलविज्ञान विभाग रूड़की विश्वविद्यालय के नवोदित विभागों में से एक है। विभागीय संकाय तथा कर्मचारी पूर्ण समर्पित भाव से वैज्ञानिक, इन्जीनियरों एवं तकनिकी विदों को प्रशिक्षण प्रदान करने में लगे हुए हैं जिससे कि जलविज्ञान के क्षेत्र में समुचित प्रतिभा का विकास हो एवं सिंचाई प्रबन्ध को नयी दिशायें प्रदान की जा सके। तेजी से बढ़ती भारत एवं विश्व की जनसंख्या को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की दिशा में ऐसा प्रयास अत्यन्त आवश्यक है। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हर सम्भव विभागीय प्रयत्न रहे हैं कि संसार में विकसित की जाने वाली विभिन्न आधुनिक तकनीकों को न केवल जाना जा सके वरन् हर सम्भव प्रयास उनको आत्मसात करने की दिशा में हो जिससे कि शिक्षण एवं शोध को नयी दिशायें एवं आयाम प्रदान की जा सके।

जल संसाधन विकास प्रशिक्षण केन्द्र, रुड़की

भारत तथा तृतीय विश्व के देशों में कार्यरत अभियन्ताओं के उच्च शिक्षण तथा प्रशिक्षण के लिए जल संसाधन विकास प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना 25 नवम्बर 1955 को की गई थी। इस केन्द्र की स्थापना से एशिया और अफ्रीका के देशों के बीच आपसी सहयोग तो बढ़ा है ही, साथ ही तकनीकी का आदान-प्रदान करने से इन देशों की आत्म-निर्भरता को काफी बल मिला है। यह केन्द्र रूड़की विश्वविद्यालय की एक शोध इकाई है। रूड़की विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डा. ए. एन. खोसला, जो केन्द्र के प्रथम निदेशक बने, का इस केन्द्र के लक्ष्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना के मुख्य तीन उद्देश्य रहे हैं: (1) जल संसाधन इंजीनियरी में समन्वित कार्यक्रम के तहत कार्यरत इंजीनियरों को प्रशिक्षण देना, (2) एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका उपमहाद्वीपों की इंजीनियरिंग प्रतिभाओं को पारस्परिक सहयोग के लिए एक सूत्र में बाँधना और तकनीकी का स्थानांतरण करना, (3) जल संसाधन विकास तथा जल के उपयोग में आने वाली समस्याओं का समाधान खोजना। अभी तक यह केन्द्र भारत सहित 38 देशों के लगभग 1800 से भी अधिक कार्यरत इंजीनियरों को उच्चस्तरीय प्रशिक्षण दे चुका है। इन देशों में अदन, अफगानिस्तान, चीन, मिस्र, घाना, ईरान, जापान, केन्या, नेपाल, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, फिलीपाइन्स, श्रीलंका, वियतनाम, सीरिया, मलेशिया आदि विकासशील छोटे-बड़े राष्ट्र हैं।

इस केन्द्र में जल प्रबन्धन, विद्युत, यांत्रिक एवं जानपद विधाओं में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, एम. टेक. तथा पीएच. डी. स्तरीय शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की व्यवस्था है। इन क्षेत्रों के अंतर्गत जल संसाधनों का वैज्ञानिक मूल्यांकन, प्रबंध एवं आयोजन व्यवस्था, जलीय संरचनाओं की कम खर्चीली और सुरक्षित रचना तथा परियोजनाओं के निर्माण की आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण यहाँ दिया जाता है। जल प्रयोग प्रबंध के क्षेत्र में कृषि विषयक कई समस्याओं के समाधान में इस केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस केन्द्र में प्रयोगात्मक अध्ययन के लिए प्रयोगशालाऐं आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित है। इस केन्द्र में जल संसाधन विकास के विभिन्न पहलुओं पर शोधरत शोध-विद्वानों के लिए संगणक और पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है।

जल संसाधन के विभिन्न विधाओं में इस संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस केन्द्र के व्यापक तथा गहन प्रशिक्षण से भारत सहित तृतीय विश्व के कई देश जल संसाधन के क्षेत्र में लाभान्वित हुए हैं। यह केन्द्र अपने अद्वितीय प्रशिक्षण माध्यम से भारत और तृतीय विश्व के अनेक राष्ट्रों के विकास एंव मानव समुदाय के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है।

वैकल्पिक जल ऊर्जा केन्द्र, रुड़की

गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत विभाग, भारत सरकार द्वारा वैकल्पिक ऊर्जा केन्द्र की स्थापना की गई थी। लघु जल विद्युत परियोजनाओं के संस्थापन एवं शोध कार्य के लिए यह एक अनुपम केन्द्र है। यह रूड़की विश्वविद्यालय की एक इकाई है। यह केन्द्र जल विद्युत ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के संस्थापन और परिचालन संबंधी कार्यों में संलग्न है। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य लघु जल विद्युत ऊर्जा का उत्पादन एवं परिचालन, लघु जल विद्युत परियोजनाओं के संस्थापन की समस्याओं का समाधान करना, ऐसे स्थानों का पता लगाना जहाँ गैर परम्परागत ऊर्जा परियोजनाओं का संस्थापन किया जा सकता है, ऐसे स्थानों के लिए संगत परियोजनाओं के लिए विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन तैयार करना, सरकारी, अर्द्धसरकारी व निजी संस्थाओं को वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के विकास के लिए परामर्श देना, तथा विभिन्न विधाओं में मूलभूत एवं व्यवहारिक शोध करना है।

इस केन्द्र की प्रयोगशालाऐं प्रयोगात्मक कार्य के लिए सभी उपकरणों से सुसज्जित ओर सुविकसित है। गणितीय निरूपण और गणना के लिए संगणक भी इस केन्द्र में उपलब्ध है। इस केन्द्र के शोध कार्यों से ग्राम विकास को एक नई दिशा मिल रही हैं। यह केन्द्र लघु जल ऊर्जा इकाइयों के विकास और व्यापक स्तर पर गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा एवं ज्वारीय ऊर्जा का पता लगाने एवं उसके विकास के लिए प्रयत्नशील है।

उत्तर प्रदेश सिंचाई अनुसंधान संस्थान, रूड़की

उन्नीसवीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा गंगनहर और शारदानहर जैसी कुछ बड़ी सिंचाई परियोजनाओं के कार्यान्वयन के साथ ही प्रयोगात्मक कार्य की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी थी। वर्ष 1919 में शारदानहर के लिए प्रस्तावित जल प्रपात के लिए किये गये प्रतिरूप अध्ययनों की सफलता से प्रेरित होकर श्री जेराल्ड लेसी, जो अपनी रिजीम सिद्धान्त के लिए विश्वविख्यात हैं, ने सिंचाई विभाग के अंतर्गत लखनऊ में एक शोध उपखण्ड की स्थापना 1928 में की। शोध कार्य की उपयोगिता के कारण उपखण्ड के कार्य तथा आकार में वृद्धि होती गई और वर्ष 1945 में इस संगठन को रूड़की में स्थापित करने का निश्चय किया गया, जहाँ प्रयोगात्मक कार्य के लिए अधिक सुविधायें उपलब्ध थी। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद देश एवं प्रदेश की समृद्धि हेतु आवश्यक वृहद् परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अनुसंधान कार्यों के महत्व एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए रुड़की में उपलब्ध शोध संगठन को अनुसंधान संस्थान का रूप देने का निर्णय लिया गया। इसके फलस्वरूप यह संस्थान वर्ष 1954 में अपने वर्तमान स्वरूप में स्थापित हुआ। आज यह संस्थान राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक प्रमुख शोध केन्द्र के रूप में विख्यात है एवं देश की सिविल अभियान्त्रिकी सम्बन्धी जटिल समस्याओं के निदान के लिए कृत संकल्प एवं सक्षम है।

इस संस्थान का उद्देश्य प्रदेश की सिंचाई एवं विद्युत परियोजनाओं का न्यूनतम लागत पर सुरक्षित परिकल्पन, शोध कार्यान्वयन तथा समुचित अनुश्रवण एवं मूल्यांकन हेतु आवश्यक तकनीकी आधार उपलब्ध कराना है। संस्थान के अनुसंधान कार्यों के लिए रूड़की तथा बहादराबाद में सुविकसित प्रयोगशालाऐं हैं। जल विज्ञान सम्बन्धी प्रतिरूप अध्ययन एवं शोध कार्य जल विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, बहादराबाद में होता है। संस्थान का शोध कार्य रूड़की स्थित प्रयोगशालाओं में होता है। इनमें मृतिका प्रयोगशाला, सीमेंट तथा कंक्रीट प्रयोगशाला, शैल यांत्रिकी प्रयोगशाला, भूजल प्रयोगशाला, एक्विफर मॉडलिंग प्रयोगशाला, समस्थानिक प्रयोगशाला, फोटोप्रत्यास्थ प्रयोगशाला तथा रसायनिक प्रयोगशाला मुख्य हैं। संस्थान के अंतर्गत एक मध्यम श्रेणी का सुपर मिनी संगणक एच.पी. 9050 स्थापित है जो तकनीकी विश्लेषणों में सहायता करता रहता है। संस्थान की प्रयोगशालाऐं सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। संस्थान मुख्य रूप से जिन क्षेत्रो में कार्य करता हैं वे हैं: बाढ एवं कटाव नियन्त्रण कार्य, पुलों एवं बैराज आदि का स्थल निर्धारण एवं नदी नियन्त्रण, नहरों के नियंत्रण, स्पिलवे, ऊर्जा हस्तान्तरण सम्बन्धी कार्य, कुलावों के ड़िजाइन में सुधार सम्बन्धी कार्य एवं जलाशयों में भराव सम्बन्धी अध्ययन, जल विद्युत परियोजनाओं के सिविल अभियांत्रिकी कार्य, भू-जलीय अध्ययन, नहरों से रिसाव तथा विभिन्न प्रकार के स्तरीकरण का अध्ययन, मिट्टी सम्बन्धी समस्त स्थल तथा प्रयोगशाला परीक्षण, विभिन्न पदार्थों जैसे सीमेंट, कंक्रीट, चट्टानों, ईटों आदि का परीक्षण तथा कंक्रीट मिश्रण का डिजाइन, जल सम्बन्धी आंकड़ो का गणितीय अध्ययन आदि।

अपने उद्देश्य की परिपूर्ति हेतु एवं अलग-अलग विधाओं में किये जा रहे शोध एवं विकास सम्बन्धी कार्यकलापों को सुचारू रूप से करने के लिए संस्थान को आठ अलग-अलग खण्डों में विभाजित किया गया है। ये खण्ड निम्न हैं .

1. जल विज्ञान खण्ड-1
2. जल विज्ञान खण्ड-2
3. जल विज्ञान खण्ड-3
4. भू-जल खण्ड
5. मृतिका खण्ड
6. पदार्थ परीक्षण खण्ड
7. आधारान्वेषण खण्ड
8. प्रशासन खण्ड

उत्तर प्रदेश सिंचाई अनुसंधान संस्थान ने शोध कार्यों में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए देश में तथा विदेश में भी ख्याति अर्जित की है। संस्थान के शोधकर्ताओं द्वारा अब तक 300 से भी अधिक शोध पत्र देश व विदेश के जर्नलों और पत्रिकाओं में प्रकाशित किये गए हैं। संस्थान उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग द्वारा कराये जाने वाले कार्यों के अलावा उत्तर भारत के सभी राज्यों, केन्द्रीय सरकार के कई अभियंत्रण विभागों तथा संगठनों, रेल विभाग आदि को भी परामर्श देता है। संस्थान भारतीय मानक ब्यूरो की कई समितियों का सदस्य भी है।

सिंचाई परिकल्प संगठन, रुड़की

बड़ी नदी घाटी परियोजनाओं के अभिकल्पन की निर्दिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, सन् 1961 में एक अभिकल्प संगठन की स्थापना लखनऊ में की गई। उस समय रामगंगा बहुउद्देशीय परियोजना और यमुना नदी घाटी के जल विद्युत परियोजनाओं के अभिकल्पों का कार्य किया गया था। इसके बाद कई नई-नई परियोजनाओं का कार्य इस संगठन को मिला। इन कार्यों के सफल निष्पादन, विशेषकर टेहरी एवं मनेरी-भाली (स्टेज-1) जल विद्युत परियोजनाओं के अभिकल्प के लिए इस संगठन की एक शाखा रूड़की में सन् 1971 में खोली गयी। वर्ष 1978 में इसी शाखा ने सिंचाई परिकल्प संगठन का रूप ले लिया। समुचित और सुव्यवस्थित रूप से कार्यों का निष्पादन करने के लिए, इस संगठन को दो मुख्य अभियंताओं के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत 10 अभिकल्प मंडलों और 44 अभिकल्प इकाइयों में विभाजित किया गया है। बाँधों का अभिकल्प, जलविज्ञान और बडे नहर-कार्यों जैसे ऑक्विडक्ट, बैराज आदि का कार्य मुख्यतः मुख्य अभियन्ता बाँध के निर्देशन में किया जाता है। विद्युत गृह, इनटेकैं, जल वाहक प्रणाली, सुरंग, महोर्मि जल-कुंड आदि संरचनाओं का अभिकल्प कार्य मुख्य अभियन्ता (विद्युत गृह) के नियन्त्रणाधीन है।

इस संगठन का मुख्य उद्देश्य सिंचाई, जल विद्युत और बहुउद्देशीय परियोजनाओं का नियोजन, विस्तृत अभिकल्पों की तैयारी और रचनात्मक आरेखन है। यह संगठन निम्न क्षेत्रों में अभिकल्पन का कार्य करने में सक्षम है :

कंक्रीट गुरूत्वीय बाँध
मिट्टी और चट्टानीय बाँध
रोलर घनित कंक्रीट बाँध
सतही एंव भूगर्भीय जल विद्युत गृह
महोर्मि जल-कुण्ड
पेनस्टॉक
इनटेक एवं अवसाद सदन
विभिन्न प्रकार के द्रवचालित फाटक
पूर्व प्रतिबल कंक्रीट पुल और ऑक्विडक्ट, बैराज, क्रौस ड्रेनेज कार्य और नहर कार्य

यह संस्थान अन्य राज्यों और राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों जैसे केन्द्रीय जल आयोग, नई दिल्ली, केन्द्रीय जल एवं अनुसंधान केन्द्र, पुणे, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, जल संसाधन विकास प्रशिक्षण केन्द्र, रूड़की, रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की, उ0 प्र0 जल एवं भूमि प्रबन्धन संस्थान, ओखला और केन्द्रीय अभिकल्प निदेशालय, लखनऊ, आदि से निकट संबंध रखता है ताकि जल संसाधन के समुचित विकास में पारस्परिक सहयोग मिल सके।

फील्ड और प्रयोगात्मक परीक्षणों के लिए संस्थान में उपस्थित प्रयोगशालाऐं सभी उपकरणों से सुसज्जित और सुविकसित है। इस संगठन के लिए द्रव चालित और प्रकाशप्रत्यास्थीय प्रारूपों का अध्ययन सिंचाई अनुसंधान संस्थान, रूड़की में किया जाता है। गणितीय प्रारूपण और गणना के लिए इस संस्थान में एक संगणक केन्द्र है जहॉ ग्राफिक्स और संगणीय आरेखन की व्यवस्था है। यह केन्द्र सिंचाई अनुसंधान केन्द्र स्थित एच. पी. 9050 सुपर मिनी संगणक से भी जुड़ा हुआ है। पुस्तकालीय जरूरतों के लिए यह केन्द्र सिंचाई अनुसंधान केन्द्र, रूड़की में स्थित पुस्तकालय से सम्पर्क करता है।

यह केन्द्र जल संसाधन अभियांत्रिकी की सभी विधाओं में मूलभूत और व्यवहारिक शोध कार्यों को करने में सक्षम है। पिछले लगभग तीन दशकों में इस केन्द्र ने विभिन्न परियोजनाओं के अभिकल्प कार्यों के द्वारा देश के विकास में सराहनीय योगदान दिया है। यमुना जल विद्युत परियोजना, मनेरी भाली, चिल्ला तथा खारा जल विद्युत परियोजना आदि का अभिकल्पन इस केन्द्र की कुछ उपलब्धियाँ हैं। इस केन्द्र ने 13 मिनी और माइक्रो जल विद्युत परियोजनाओं का भी अभिकल्पन किया है। सिंचाई जल विद्युत और बहुउद्देशीय परियोजनाओं के अभिकल्पन में यह संगठन वर्तमान में संलग्न है। संगठन अपने उद्देश्यों के प्रति हमेशा जागरूक रहा है और स्थापना काल से ही देश के विकास के लिए कृत संकल्प है।

उत्तर प्रदेश राजकीय उद्योगशाला, रूड़की

उ0 प्र0 राजकीय उद्योगशाला, रूड़की सिंचाई विभाग के अन्तर्गत एक काफी बड़ी एवं प्रतिष्ठित कार्यशाला है। इसकी स्थापना वर्ष 1843 में गंगा नहर के निर्माण के समय कैनाल फाउन्ड्री के नाम से की गयी थी। उस समय गंगा नहर के निर्माण में उपयोग हुई सभी लोहे की सामग्री इस कार्यशाला द्वारा निर्मित करायी गयी थी। यह कार्यशाला कुछ समय के लिए निजी क्षेत्र में रहने के उपरान्त वर्ष 1943 में डिफेन्स ऑफ इण्डिया रूल्स के अन्तर्गत पुनः राजकीय नियंत्रण में ले ली गयी एवं काफी समय तक उद्योग विभाग के अन्तर्गत कार्यरत रही। वर्ष 1953 में इस कार्यशाला का नियंत्रण उद्योग विभाग से लेकर सिंचाई विभाग को सौंप दिया गया। तब से लगातार यह कार्यशाला सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत कार्यरत है। गंगा नहर, जिसके लिए इस कार्यशाला को स्थापित किया गया था, उससे सम्बन्धित विश्व बैंक पोषित ऊपरी गंगा नहर आधुनिकीकरण परियोजना के लिए वर्तमान में इस कार्यशाला द्वारा रेडियल गेटों के निर्माण एवं स्थापन सम्बन्धी विभिन्न कार्य सम्पादित कराये जा रहे हैं।

यह कार्यशाला काफी वर्षों से जलयांत्रिक संयंत्रों के निर्माण एवं स्थापन, विद्युत विभाग के लिए ट्रांसमीशन टावर्स तथा रेलवे विभाग के लिए वैगन निर्माण एवं अन्य कार्य सम्पादित कराती रही है। वर्तमान में इस कार्यशाला द्वारा सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश, उ0 प्र0 राज्य विद्युत परिषद, बी0 एच0 ई0 एल0, एन0 एच0 पी0 सी0, त्रिवेणी स्ट्रक्चरल्स लि0 तथा पेपर मिल्स इत्यादि के विभिन्न कार्य सम्पादित कराये जा रहे हैं। कार्यशाला में प्रयोग होने वाला सभी कच्चा माल स्टील अथारिटी ऑफ इण्डिया लि0, टिस्को, इस्को, बी0 सी0 सी0 एल0 इत्यादि से सीधे क्रय किया जाता है। कार्यों की गुणवत्ता को नियंत्रित रखने के लिए विभिन्न सामग्री एवं तैयार संयंत्रों की टैस्टिंग समय-समय पर रूड़की विश्वविद्यालय, रूड़की, सिंचाई अनुसंधान संस्थान, रूड़की एवं श्रीराम टैस्ट हाउस, दिल्ली से करायी जाती है। परिकल्पन सम्बन्धित कार्यों के लिए परिकल्प निदेशालय, रूड़की/लखनऊ से सहायता ली जाती है। इस कार्यशाला में वर्तमान में लगभग 450 अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यरत हैं।

कार्यशाला की वार्षिक क्षमता लगभग 3500 टन फैब्रीकेटिड आइटम एवं कास्टिंग इत्यादि की है और इस प्रकार इस कार्यशाला की वार्षिक उत्पादन क्षमता लगभग 10 करोड़ रूपये है। इस कार्यशाला द्वारा न केवल देश की सिंचाई एवं विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है बल्कि पिछले वर्ष इस कार्यशाला ने बी0 एच0 ई0 एल0 के माध्यम से गैस टर्बाइन, जो यूरोप को पहली बार निर्यात की गई है, से सम्बन्धित संयंत्रों का निर्माण कराकर देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने में योगदान दिया है।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की

भवन विज्ञान और औद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नत कार्य के उद्देश्य से सन् 1946 में विज्ञान एवं औद्योगिकी परिषद की अनुशंसा पर इस संस्थान की स्थापना की गई। प्रारम्भ में यह संस्थान भवन अनुसंधान की इकाई के रूप में थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, रूड़की, जो आज रूड़की विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्व है, के अंतर्गत कार्य करता था। 1950 से इस इकाई ने केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की के नाम से स्वतंत्र रूप से कार्य करना प्रारम्भ किया। इस संस्थान ने अपने प्रथम निदेशक, स्वर्गीय श्री जे. एन. मुखर्जी की देख रेख में अपने लक्ष्यों को आयाम देना शुरू किया। पिछले चार दशकों में संस्थान ने भवन निर्माण और भवन सामग्री के क्षेत्रों में सराहनीय योगदान दिया है।

राष्ट्र के विकास के लिए गठित इस संस्थान का मुख्य लक्ष्य विभिन्न योजनाओं में काम में आने वाली संरचना अभियांत्रिकी की विभिन्न समस्याओं का निदान सुरक्षित और कम लागत वाले अभिकल्पों के द्वारा करना रहा है। भवन योजनाओं की विभिन्न समस्याओं का निदान, फाउण्डेशन, भवन सामग्री, ग्रामीण एवं शहरी भवनों, ऊर्जा संरक्षण, अग्नि रोधक संरचनाओं और भूकम्परोधी भवनों के लिए समुचित और कम लागत वाले अभिकल्पों के निर्धारण में इस संस्थान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थापना काल से अब तक के समय के दौरान संस्थान ने भवन विज्ञान और संरचना अभियांत्रिकी की विभिन्न विधाओं में काफी उच्च दक्षता और विशिष्टता हासिल कर ली है। नये और जटिल तकनीकी क्षेत्रों जैसे गतिकी प्रभाव, अरैखिक व्यवहार, मृदा संरचना की पारम्परिक क्रियाओं आदि में भी संस्थान ने अपनी मंजिल तय करनी शुरू कर दी है। संस्थान के शोध कार्यों की जानकारी सारे भारत में प्रसारित करने हेतु भारत के कुछ मुख्य शहरों में संस्थान के विस्तार केन्द्र खोले गए हैं। जिन शहरों में ये विस्तार केन्द्र हैं, वे निम्न हैं :

अहमदाबाद, भोपाल, कलकत्ता, दिल्ली, हैदराबाद तथा तिरूवनन्तपुरम।

उद्देश्य

- भवन विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र के समक्ष उपस्थित समस्याओं के निराकरण के लिए -
  (क) आवास नियोजन (ख) भवन सामग्रियाँ (ग) संरचनाऐं एवं नीवें तथा
  (घ) क्षति न्यूनीकरण के क्षेत्रों में मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान करना।
- भवन सामग्रियों तथा पद्धतियों के प्रोत्साहन के लिए नयी प्रौद्योगिकियाँ विकसित करना।
- अनुसंधान के परिणामों को, समाज हित में, दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँचाना।
- विकसित प्रौद्योगिकियों को, वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए उद्योगों को हस्तांतरित करना।

अनुसंधान एवं विकास के प्रमुख क्षेत्र

1. **आवास एवं नियोजन**

आवास, शहरी एवं ग्रामीण भवन, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य भवन, प्रदीप्ति (प्रकाश) सहित भवन भौतिकी, तापशीतलन (वातानुकूलन), संवातन एवं ध्वानिकी, अविनाशी परीक्षण।

2. **नयी सामग्रियाँ**

कार्बनिक भवन सामग्री, सीमेंट, चूना एवं मृत्तिका उत्पाद, अपशिष्ट पुनःचक्रण, दीमक नियंत्रण के लिए पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित कीटनाशक, नयी सामग्रियों से संरचनात्मक भवन घटक, अग्नि अवरोधी सामग्रियाँ।

3. **संरचना एवं नींव इंजीनियरी**

संरचनात्मक विश्लेषण एवं अभिकल्प, निर्माण प्रौद्योगिकी, क्षतिग्रस्त संरचनाओं का पुनर्निर्माण, कंक्रीट प्रौद्योगिकी, भू-तकनीकी इंजीनियरी, ढाल स्थायित्व, शैल यांत्रिकी, पाइल नीवें, फूलने वाली मिट्टियों में नींवे।

4. **दुर्घटना न्यूनीकरण/क्षति न्यूनीकरण**

भवन गतिकी, चक्रवात के पूर्व एवं पश्चात् क्षति न्यूनीकरण, भूकम्प एवं भूस्खलन, भवनों में अग्नि संकट, अग्नि प्रतिरोधक पद्धति, अग्नि विस्तार प्रतिरूपण एवं अनुकरण।

5. **प्रक्रम विकास**

भवन सामग्रियों के उत्पादन की प्रौद्योगिकी, प्रायोगिक संयंत्र, निर्माण यांत्रिकी, पूर्व संविरचन।

6. **सूचना, परियोजना प्रबंधन एवं प्रसार**

पुस्तकालय सेवाएं, कंप्यूटर समर्थित सूचना विज्ञान, अनुसंधान परियोजना प्रबंधन, प्रसार गतिविधियाँ, विपणन, प्रचार, विज्ञापन, जन-संपर्क।

इस संस्थान में 300 से भी अधिक वैज्ञानिक शोध कार्यो में लगे हैं। संस्थान की कार्यशाला और प्रयोगशालाएँ सुविकसित एवं नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित है। पुस्तकालय में करीबन अट्ठाइस हजार से भी अधिक पुस्तकें हैं। इस संस्थान का पुस्तकालय 60 भारतीय तथा 60 विदेशी पत्रिकाओं को मंगाता है। अलग-अलग विधाओं में किये जा रहे शोध एवं विकास संबंधी कार्यकलापों को सुचारू रूप से करने के लिए संस्थान को 10 विभागों में विभाजित किया गया है। ये विभाग निम्नलिखित हैं :

1. वास्तुकला विभाग
2. भवन सामग्री विभाग
3. भवन उत्पादकता, विधि, संयंत्र विभाग
4. विकास निर्माण एवं प्रसार विभाग
5. भवन दक्षता विभाग
6. अग्नि अनुसंधान विभाग
7. मृद्रा अभियांत्रिकी विभाग
8. संरचना अभियांत्रिकी विभाग
9. ग्रामीण भवन एवं पर्यावरण विभाग
10. सूचना एवं विदेश सहयोग विभाग

यह संस्थान भवन निर्माण और संरचना अभियांत्रिकी की विभिन्न विधाओं में उच्च तकनीक उत्पन्न करने और देश के विकास में आने वाली विभिन्न संरचना संबंधी समस्याओं के निदान हेतु कृत संकल्प है।

बंगाल इंजीनियर ग्रुप, रूड़की

भारतीय सेना ने अपने कार्यों और उत्तरदायित्वों को निभाने में आने वाली तकनीकी समस्याओं के समाधान हेतु कैप्टन टी. वुड के नेतृत्व में एक अभियांत्रिकी सैनिक संगठन का गठन किया था, गठित की थी, जो आज बंगाल इंजीनियर ग्रुप कोर ऑफ इंजीनियर्स (बी.ई.जी.) के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रुप के इंजीनियरों का भारतीय सेना की उपलब्धियो और गतिविधियों मे काफी योगदान रहा है। कुछ घण्टों में बड़े-बडे पुल निर्मित करके सेना को आगे बढने के लिए मार्ग प्रशस्त करना, रेलों और मोटर वाहनों के लिए पुल और पटरियों तथा सड़को का तुरन्त निर्माण तथा सुरक्षात्मक दृष्टि से विस्फोटक सुरंगो को बिछाना आदि इस ग्रुप के इंजीनियरों की मुख्य जिम्मेदारी होती है। आपातकालीन और आपदा के समय में इस ग्रुप के इंजीनियर्स बड़ी ही तत्परता और जिम्मेदारी के साथ अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं।

आजादी के पूर्व सन् 1803 में अपनी स्थापना के 36 वें वर्ष में इस ग्रुप ने अफगानिस्तान में अपने कारनामे दिखाए थे। इस फतह पर इस ग्रुप के सेनानी सूबेदार सिंह को "इंडिया आर्डर ऑफ मैरिट" नामक वीरता-सम्मान प्रदान किया गया था। आजादी के बाद हुए युद्धों में इस कोर ने अपनी शोर्यमयी उपलब्धियों से अपने देश के लिए महान सम्मान अर्जित किए हैं। केवल युद्ध के मैदान में ही नहीं, अपितु देश की आन्तरिक स्थिति जब-जब असामान्य हुई और आन्तरिक खतरा बढ़ा है, तब-तब बंगाल इंजीनियर्स की अप्रतिम सेवाएं राष्ट्र को मिली हैं। ग्रुप ने भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न उपलब्धियों को हासिल करके पदम भूषण, परमविशिष्ट सेवा मैडल, पद्यमश्री, अतिविशिष्ट सेवा मैडल, कीर्ति चक्र, वीरचक्र, शौर्य चक्र, सेवा मैडल, विशिष्ट सेवा मैडल, जीवन रक्षा मैडल, अर्जुन पुरस्कार, भूटान कोरोनेशन मैडल तथा सिक्किम कोरोनेशन मैडल प्राप्त कर अपनी परम्परा को अक्षुण्ण रखा है।

क्रीडा के क्षेत्र में भी बंगाल इंजीनियर्स के सैनिकों ने राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय क्रीड़ाओं में अपनी प्रतिभा और शक्ति का परिचय दिया है। तैराकी, बॉस्केटबाल, कुश्ती, वाटरपोलो, भारोत्तोलन, फुटबॉल और कबड्डी जैसे खेलों में भी इस ग्रुप की कई हस्तियां अपने ग्रुप और अपने देश का नाम रोशन कर रही हैं।

With Best Compliments From:

PCL

INDIA'S No. 1 PC COMPANY

Pertech Computers Ltd.,
68, Chakrata Road, Near Bindal Bridge
DEHRADUN - 248 001
Tel.: 652105, 658405
Tlx.: 0585 - 345 EBD IN
Fax.: 0091 - 0135 - 629944, 658392

59

DIESEL GENERATORS

RATINGS

- ❖ 100 KVA TO 1250 KVA
- ❖ 2MW TO 6 MW (Cummins Engines)
- ❖ 10KVA TO 82.5 KVA (Kirlosker Engines)
- ❖ POWERED WITH KIRLOSKER AND AVK GENERATORS
- ❖ SILENT GENERATORS

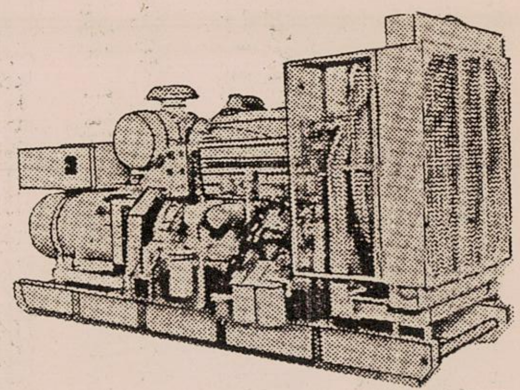

JAKSON GENSETS

JAKSON ENGINEERS LIMITED

REGD. OFFICE
NEW DELHI
102, RATAN JYOTI
18, RAJENDRA PLACE,
NEW DELHI-110 008
Ph. 011-5721590, 5748656
5748654 Fax : 011-5753427
Grams.: JAKPOWER

BOMBAY
1, CHINTAMAN NAGAR
SECTOR-14, VASHI
NEW BOMBAY - 400 703
Ph.: 022 - 7664454
Fax. : 022-7632020

PUNE
154, KARVE ROAD
KOTHRUD
PUNE - 411 029
Telefax. : 0212-334206
Grams: JAKSON

AHMEDABAD
307, VANIJYA BHAWAN
BEHIND ABAD DAIRY
KANKARIA
AHMEDABAD - 380 022
Ph.: 079-363937
Fax.: 079-310213

WORKS
PLOT NO.-1
SILVER INDUSTRIAL
ESTATE, BHIMPORE
DAMAN (U.T.)
Ph.: 02626-32180
Fax.:0236-33116

CONTINUOUS POWER CONTINUOUS GROWTH

With best wishes from:

MERCK - WE ARE TUNED TO YOUR FREQUENCY

- AAS/ICP STANDARDS, OIL SOLUBLE STANDARDS
- ULTRAPUR/SUPRAPUR GRADE CHEMICALS FOR ppb/ng ESTIMATION
- ORGANIC TRACE ANALYSIS SOLVENTS "SUPRASOLVS"
- NMR SPECTROSCOPY SOLVENTS, SHIFT REAGENTS, AUXILLARIES
- KARL FISCHER REAGENT FOR COULOMETRY
- APPARATUS CLEANSING "EXTRAN"
- ELECTROPHORESIS CHEMICALS
- BIOCHEMICALS AND WIDE RANGE OF ENZYMES
- INDICATOR STAINS "GURR" CERTISTAIN
- TEMPERATURE INDICATORS "SIGNOTHERM"
- SILICONS
- ELECTRONIC GRADE CHEMICAL ULSI/VLSI "SELECTIPUR"
- DNA SYNTHESIS CHEMICALS

Get the **MERCK** *advantage*

MERCK

E. Merck (India) Limited
Shiv Sagar Estate 'A' Dr. Annie Besant Road, Worli, Bombay - 400 018
Phone: 496 4855-62 Fax.: 022-495 0307/ 495 0354

62

With Best Compliments
from:

PCI

Precision Control Instruments

Manufacturers of :
Servo and Automatic Voltage Stabilizers
Isolation Transformers
CVT's & U.P.S.

Please Contact:
B-74, Okhla Industrial Area, Phase - II, New Delhi - 110 020
Fax: 011-2457609

With Best Compliments

From:

TATA ELXSI (INDIA) LIMITED

Leaders in Graphics, Multimedia, Visual and Technical Computing.

M-15, IInd Floor, Greater Kailash -II Market
New Delhi - 110 048
Tel.: 6469474, 6478945, 6478946 Tlx.: 031 - 71371 TLXE IN
Fax.: 91-11-6478942 VMS : 91 - 11 - 3760297

Registered Office : 123, Richmond Road, Banglore - 560 025.
Tel.: 563956, 564835, 564872
Fax: (080) 5583168

64

With Best Wishes from:

The Surindra Scientific Glassware Co.

Manufacturers & Suppliers of :

All Kinds of
Laboratory Table
Lamp Blown Borosil
Galss Apparatus

Specialist in :
Interchangeable
Glass Assemblies
and
High Vaccum Valves

2288, Kacha Bazar, Ambala Cantt.-133 001 (Hr.) Ph.:22010

नवाब अली ठेकेदार

६९०, वैस्ट अम्बर तालाब, रुड़की (हरिद्वार)

NAWAB ALI CONTRACTOR

690, WEST AMBER TALAB, ROORKEE (HARDWAR)

GOVERNMENT CONTRACTOR & GENERAL ORDER SUPPLIER

Super Painting :

SPRAY PAINTING, COLOUR WASHING, BRICK WORKS, WOOD FURNITURES, WELDING WORKS, REPAIRING OF ALL TYPES OF STEEL FURNITURES

with best compliments from:

Classic Decorator

A HOUSE OF INTERIOR

Dehradun Road, Rampur Chungi, ROORKEE, Ph. : 74307

Deals in:

Aluminium Door

Wall Paper

Drapery Rod.

Ventation & Vertical Blind

False Ceiling

Wall to Wall Carpet

P.V.C. Flooring

Sun Control Film

Wooden Work

Decorative Moulding Beading

THE PEOPLE
WHO MAKE SOME
OF THE BEST
GLASS SEND YOU
THEIR BEST COMPLIMENTS

BOROSIL®

MAKERS OF LABORATORY
GLASSWARE, INDUSTRIAL
AND
LIGHTING PRODUCTS.
CONSUMERWARE-CARAFES,
BAKE & SERVE
AND
VISION GLASSES
Q.V.F. PROCESS PLANTS

BOROSIL GLASS WORKS LTD.
Khanna Construction House,
44, Dr. R. G. Thadani Marg,
Worli, Bombay 400 018.

with best compliments from:

PRADEEP SCIENTIFIC CORPORATION

17, Pahari Bazar, Ist Floor, Roorkee - 247 667
Phone : 01332 - 74005, Res. (74140)

Authorised Stockist :

QUALIGENS, SDS
SPECTROCHEM, SRL
CHEMICALS, REAGENTS
& BIO-CHEMICALS

NSW, PERFIT
NAINA AIMIL ISTRUMENTS
& EQUIPMENTS

67

With best compliments from:

DELITE ENGINEERING CORPORATION

Engineers, Manufacturers & Suppliers of Survey, Drawing, Mathematical, Scientific, Meteorological, Hydrological, Water Resources Development, Tracking Equipments

Specialist in :

Automatic Level Recorder with Microprocessor, Data Logger, Rain Gauage Recording/non recording and Stage Water Level Recorder with Sen paper etc.

49/1, Jamuna Bhawan (B.T.Ganj) Roorkee 247 667 (INDIA)
Ph. : 01332-(O) 72820, (R) 72639, Gram: DELITE, Fax.: 72639

with best compliments from
INA INDUSTRIES

ATTENTION CONSUMERS/DEALERS

The trusted name in Lab Coats

Fine Quality Superb Finish
At
Reasonable price
Available in
Cotton & Polyster

Manufacturers
INA INDUSTIES
17, Pahari Bazar, Ist Floor
Roorkee - 247 667, India, Ph.: 01332 - 74005

Authorised Stockistship Enquiries Solicited

With

Best

Compliments

from :

SHEEL SCIENTIFIC TRADERS

A-921/50, Indira Nagar, Lucknow

Ph : 0552-381591

Deals in :

Mechanical, Electrical and Electronic & Hardware

Expert in Fabrication of all typical type lab. and other

Scientific Equipments & General order supplier

With Best Compliments From

VIGYAN VILLA

FOR

- FREEZERS
- ELECTRONIC AIR CLEANERS
- LAMINAR FLOWS
- B.O. D. INCUBATORS
- ORBITAL INCUBATOR SHAKERS
- DRY-ICE MACHINE
- ICE FLAKERS
- AIR CURTAINS
- REFRIGERATED CENTRIFUGE
- HUMIDITY TEST CHAMBERS
- THERMAL SHOCK CHAMBERS
- DEHUMIDIFIERS
- 'TARSONS' PLASTIC WARE
- BOROSIL GLASS APP.
- ANALYTICAL BALANCES
- DIGITAL THERMOHYGROMETERS (IMPORTED)
- 'WHATMAN' FILTER PAPERS
- TEST & MEASUREMENT APP.
- SOIL & WATER TEST EQUIPMENT
- FINE CHEMICALS
- STOP WATCHES
- ANEMOMETERS
- PADOMETERS
- ALTIMETERS

and

A wide range of Research Lab. Equipments, Instruments & Apparatus of highgrade quality

Please contact:

VIGYAN VILLA

Chowk Bazar, Roorkee (U.P.) 247 667

Phones : 01332 - 72459 (Off.) 73567 (Resi.)

Fax : 01332 - 74656

With best compliments from:

N. K. Systems

Dealers in :

Computer Systems : Hardware & Software, Peripherals, Accessories, Consumables and Softwares.

Prompt Delivery **High Quality**

N. K. Systems

91, Tagore Villa, Dehradun - 248 001
Tel.: 0135 - 22148, Fax.: 0135 - 25078

With best compliments from:

Ajay Printers & Publishers

19, Civil Lines, Roorkee
Ph.: 01332 - 73140
Fax.: 91 - 1332 - 74740

With best wishes from:

No.1 & First Offset Press of Roorkee

Anubhav Offset Printers

New Hardwar Road, 15 Civil Lines, Roorkee
Ph.: 01332 - 71237, 72007

Imagine having the best computing solution at your doorstep

Imagine having the greatest computing power at your command

Imagine "Digital" from " Apt Technologies"

Alpha AXP from Digital

Alpha AXP systems on every count, they bring
You the raw, invincible power you could only dream of:

The World's fastest **CHIP**	The World's fastest **PC**	The World's fastest **WORKSTATION**
The World's fastest SINGLE PROCESSOR SERVER	The World's fastest 64-BIT ARCHITECTURE	

...which give you unmatched capacity, longevity and openness.
But that's not all. Alpha AXP is designed to grow through the next decades.
Keeping pace with your needs.

Digital Equipment (India) Limited
(an affiliate of Digital Equipment Corporation, USA)
Digital Park, Yeswanthpur, Bangalore - 560 022.
Tel : 3344785 Tlx. : 0845-8758 DEHQ IN Fax.: 080 - 3344601

aptech **PUTTING IMAGINATION TO WORK** digital

Call or Contact

APT TECHNOLOGIES PVT. LTD.
807, Manjusha, 57, Nehru Place, New Delhi - 110 019
Phones : 6469243, 6469245, 6969189 Fax: 91-11-6473353

composed & printed at: anubhav offset printers, roorkee ph.: 01332-71237